★ वर्ष 43 ★ अंक 11 ★ नवम्बर 2016

₹15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 43 ● अंक 11 ● नवम्बर 2016 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries
Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
20. वर्ग पहेली
22. समाचार
24. पहेलियां
31. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. जन्मदिन मुबारक
48. रंग भरो परिणाम
50. चित्र पहेली

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कहानियां

7. हथेली पर चिनगारियां
: डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

21. जादुई छड़ी
: जय अहिरवार

29. मूर्खों का न्याय
: राजेन्द्र परदेसी

33. स्वावलम्बी होना मनुष्य का सबसे बड़ा गुण
: अंजू अहिरवार

41. मामाजी की सीख
: कंचन शर्मा

कविताएं

11. दीप जले दीवाली आई
: महेन्द्र कुमार वर्मा

17. दीपों की पंक्ति दिवाली
: हरजीत निषाद

26. साधन यातायात के
: डॉ. परशुराम शुक्ल

32. सदा बड़ों का आदर करना, अच्छे बच्चे
: महेन्द्र सिंह शेखावत

39. जगमग दीप
: राजेन्द्र निशेश

43. चाचा नेहरु
: डॉ. सेवा नन्दवाल

विशेष / लेख

16. कहानी मोमबत्ती की
: भारती शर्मा

18. पैराशूट की कहानी
: दिनेश दर्पण

25. संसार का चौथा बड़ा समन्दर – अराल सागर
: कमल सोगानी

28. उड़ने वाला कालीन
: किरण बाला

38. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

40. घोड़ा नहीं मछली है– 'सी हॉर्स'
: नीलम ज्योति

सबसे पहले

ज्ञान की समझ

सोनू स्कूल से आकर अपने पापा से बोला– आज हमें स्कूल में बताया कि दीपावली का त्योहार आने वाला है और यह भी बताया कि हमें दीपावली का त्योहार कैसे मनाना है।

पापा के पूछने पर सोनू ने बताया– इस दिन हमें अच्छे एवं नये–नये कपड़े पहनने हैं, घर में दीपक जलाने हैं, घर की सजावट करनी है, मिठाईयां खानी हैं, पूजा करनी है और इस दिन हमारे स्कूल की छुट्टी भी रहेगी।

पापा ने फिर पूछा कि आपको दीपावली के बारे में कुछ और भी बताया होगा।

इस पर सोनू ने कहा कि मुझे तो केवल इतना ही याद रहा, बाकी हमारी समझ में कुछ नहीं आया परन्तु वे कह रहे थे कि इस दिन असत्य (रावण) पर विजय प्राप्त कर भगवान श्रीराम जी अयोध्या लौटे थे और सभी खुशी में उनका स्वागत कर रहे थे, दीपक जलाकर, मिठाईयां बांटकर इत्यादि–इत्यादि।

पापा ने फिर कहा– बेटा, तुम्हें तो सब समझ में आ रहा है फिर ऐसा क्या है जो आपको समझ नहीं आया।

सोनू बोला– पापा हम तो सभी सत्य पर इस तरह विजय पा लेते हैं कि सत्य बेचारा देखता ही रह जाता है। सत्य की सुनता कौन है?

यह सुनते ही पापा स्तब्ध रह गये। सोनू को प्यार से अपने पास बैठाया और समझाया–

सत्य ज्ञान की वह समझ है जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं तो प्रकाशित होता ही है और उसके सम्पर्क में आने वालों को भी प्रकाशित करता है। जो भी दीपक को प्रज्ज्वलित करता है उसको तो रोशनी मिलती ही है और जो आस–पास होते हैं उन्हें भी रोशनी मिलती है। इसी तरह सभी का अन्धकार भी समाप्त हो जाता है तथा रोशनी में हम सबकुछ स्पष्ट देख पाते हैं।

सत्य कभी मिटाया नहीं जा सकता। सत्य अमर है, अजर है, अविनाशी है। हर काल में, समय में सत्य एक जैसा ही रहता है। इस सत्य की पहचान को ज्ञान कहा जाता है। जो इस सत्य को जान जाते हैं उनके मन रोशनी से, नूर से भर जाते हैं और सभी अपने दिखाई देने शुरू हो जाते हैं। उनकी दीपावली रोज रहती है क्योंकि उनके अन्दर दीप स्वयं जल रहे होते हैं।

प्यारे साथियों! हमें भी अपने अन्तर्मन की ज्योति को प्रकाशित करना है। यह संसार हमारा ही प्रतिबिम्ब है। इसे हम चाहें तो इसे और भी खूबसूरत बना सकते हैं। घर की, नगर की सफाई के साथ–साथ अपने मन की सफाई भी करें और अपने मन में केवल सत्य–ज्ञान की समझ को धारण करें फिर हमें साल में केवल एक दिन दीपावली का इन्तजार नहीं करना पड़ेगा। फिर हमारी रोज ही दीवाली होगी। इस ज्ञान की समझ को जन–जन तक पहुँचाने के लिए हर वर्ष निरंकारी सन्त समागम का आयोजन होता है, जो इस बार 19, 20, 21 नवम्बर को दिल्ली में हो रहा है। इस अवसर पर पहुँचकर अपने हृदय में निराकार की परमज्योति को रोशन करें और साकार में निराकार, निराकार में साकार के दर्शन करें।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 140

जिसने धरती अग्ग बणाई ठंडा मिट्ठा पाणी वी।
जिसने जीव अकाश बणाए बख़शी ए ज़िन्दगानी वी।
कर कर सिफ़तां लेखक थक्के गीता ग्रंथ विचारे वी।
जिसने सुन्दर वायु बख़शी सूरज चन्न सितारे वी।
जिसने कन्न सुणन नूं दित्ते नैण सुहाने दर्शन लई।
जिसने बख़शे ने हथ सोहणे चरन गुरु दे परसन लई।
जिसने सुन्दर पैर बणाए सत्संगत विच जाण लई।
सोहणी सोहणी जीभा बख़शी गुण सत्गुरु दे गाण लई।
ऐसे मालक नूं कोई दस्से क्यों न हर दम याद करां।
अवतार कहे मैं एस प्रभु दा पल पल ते धनवाद करां।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी इन्सान को समझाते हुए कह रहे हैं कि जिस प्रभु ने हमारे लिए धरती, अग्नि और मीठा पानी बनाया, जिसने जीव, आकाश बनाया और हमें जिन्दगी दी। प्रभु–परमात्मा के गुणों का वर्णन कर–करके कितने ही सन्त–भक्त–लेखक लिख–लिखकर हार गए। फिर भी यह वर्णन पूर्ण नहीं हो सका। गीता–ग्रंथ आदि में भी इसी प्रभु–परमात्मा का गुणगान किया गया है। जिस प्रभु ने सुनने के लिए हमें सुन्दर कान और सुहाने दर्शनों के लिए आँखें दीं। जिस प्रभु ने सत्संग में जाने के लिए सुन्दर–सुन्दर पैर बनाए और सद्गुरु के गुण गाने के लिए सुन्दर जिह्वा दी। कोई बताए कि मैं इतने उपकार करने वाले मालिक को क्यों न हरदम याद करूं, मैं ऐसे प्रभु का क्यों न पल–पल धन्यवाद करूं।

बाबा अवतार सिंह जी इस पद के द्वारा मानव को समझा रहे हैं कि दयालु परमात्मा ने कृपा करके इन्सान को कितनी ही नेहमतें प्रदान की हैं जिनमें धरती, पानी, आग, सूरज, चाँद, सितारे, वायु, जीव, आकाश आदि तो शामिल ही हैं, साथ ही इस प्रभु ने इन्सान को आँख, कान, नाक, हाथ–पांव आदि भी बख्शे हैं जिनके द्वारा यह जीवन का आनन्द प्राप्त करता है हमें ऐसे दयालु प्रभु को पल–पल याद करना चाहिए और इसका धन्यवाद करना चाहिए।

संग्रहकर्ता :
रामअवध राम (गुरैनी)

अनमोल वचन

★ प्रेम परमात्मा का ही स्वरूप है जो अपने प्रेम को परमात्मा का रूप बना लेते हैं वही भक्त होते हैं।

★ सत्य के वचन कान से सुनने और जुबान से बोलने के लिए नहीं बल्कि जीवन में अपनाने के लिए होते हैं।

★ जिस प्रकार सागर बिना लहरें नहीं होती इसी प्रकार प्रभु के बिना सृष्टि अस्तित्व में नहीं आ सकती।

★ अपना दुःख धैर्य के साथ सहे, जबकि परदुःख लगन से बाँटें।

★ सेवा वह मीठा गुड़ है, जिसका आनन्द खाने वाला ही ले सकता है।

— बाबा हरदेव सिंह जी

★ सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यह है कि हम उसे अपने आचरण में लाएं। — एमर्सन

★ संशय से पीड़ित व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। — शिवराम कवि

★ जैसे जूते पहनकर निःशंक काँटों पर चला जा सकता है; उसी तरह तत्व ज्ञान का आवरण पहनकर मन इस काँटेदार संसार में विचरण कर सकता है। — रामकृष्ण परमहंस

★ सर्वोच्च को खोजो, क्योंकि सर्वोच्च में ही शाश्वत आनन्द है। — स्वामी विवेकानन्द

★ भाग्य कुछ भी नहीं कर सकता है यह तो केवल कल्पना है। — योग वशिष्ठ

★ धरती के सारे खजाने भी एक खोया हुआ क्षण वापस नहीं ला सकते। — फ्रांसिस लोकोक्ति

★ सदैव शुभ बोलना चाहिए, सदैव शुभ का ध्यान करना चाहिए और सदैव शुभ की इच्छा करनी चाहिए। — अज्ञात

★ समस्त उन्नति का आधार आत्मनिर्भरता है।
— सी हेम्पेज

★ प्रार्थना करो कि हे प्रभु आप हमारे समस्त दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर कीजिए।
— यजुर्वेद

★ पिता, गुरु और ईश्वर की आज्ञा पालन जैसा कोई दूसरा महाधर्म नहीं है।
— महर्षि बाल्मीकि

★ सहानुभूति मानव के हृदय की पवित्रतम भावना है। — बर्क

★ ईश्वर की निगाह में सभी बराबर हैं। जीवों से प्रेम करना वास्तविक पूजा है।

★ जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश समस्त संसार में व्याप्त है वैसे ही सभी जीवों में ईश्वर का निवास है। — संत रविदास

★ घृणा दानवों की सम्पत्ति है, क्षमा मनुष्त्व का चिह्न, जबकि प्रेम देवताओं का स्वभाव।
— भर्तृहरि

★ अज्ञान सर्वत्र आदमी को पछाड़ता है और आदमी है कि सर्वत्र उससे लोहा लेने के लिए कमर कसे रहता है। — हजारी प्रसाद द्विवेदी

दीपावली पर विशेष कहानी :
डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

हथेली पर चिनगारियां

मनु की लिखावट बहुत सुन्दर थी। इस बार जिला स्तर पर सुन्दर लिखावट की प्रतियोगिता में वह पहले स्थान पर आया था और अब दीपावली के पूरे तीन बाद उसने राज्य स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता में भाग लेना था। उसकी लिखावट इतनी सुन्दर थी कि पूरे स्कूल ही नहीं बल्कि पूरे जिले के स्कूलों का कोई भी छात्र या छात्रा उसका मुकाबला नहीं कर सकता था। पिछले तीन वर्षों से बेहतरीन लिखावट का ईनाम उसे ही मिलता था। उसके घर के ड्राइंगरूम में दो गोल्ड मेडल उसके 'हुनर' का मुँह बोलते प्रमाण थे।

मनु शरारती भी कम नहीं था। ज्यों–ज्यों दीपावली का त्योहार नजदीक आ रहा था वह बहुत खुश दिखाई दे रहा था। पिछले वर्ष भी तो उसने जमकर आतिशबाजी छोड़ी थी। समझाने के बावजूद मनु ने अपनी गुल्लक की सारी जमा–पूंजी आतिशबाजी खरीदने में ही खर्च कर दी थी। वह अपने दोस्तों पर अपने पास सबसे ज्यादा आतिशबाजी होने का रौब झाड़ता रहता था।

जब दीपावली में केवल दो दिन ही शेष रह गए तो उसने अपनी गुल्लक से दो हजार रुपये निकाले और अपने दोस्त रवि को साथ लेकर बाजार की ओर निकल पड़ा। मम्मी ने उसे समझाया कि वह इतनी आतिशबाजी मत लेकर आए लेकिन मनु कब समझने वाला था। सयाने भी तो यही कहते हैं न कि 'आँख तब ही खुलती है जब कोई ठोकर लगती है।'

मनु आतिशबाजी के दो बड़े लिफाफे खरीदकर घर आया और रसोई की ऊपर वाली 'कारनेस' पर रख दिए। शाम को पापा ऑफिस से आये तो रसोई में बड़े लिफाफे देखकर ही सब समझ गए। उन्होंने तत्काल मनु को पास बुलाया

और बोले, ''मनु, पता है तुम्हारी ये आतिशबाजी रसोई में कितनी खतरनाक साबित हो सकती है?''

मनु बोला, ''पापा कुछ नहीं होता। लाओ मैं अपने कमरे में रख आता हूँ।'' यह कहकर ज्यों ही मनु ने लिफाफे उठाने की कोशिश की तो पापा ने उसकी बाजू पकड़ ली और बोले, ''बेटा, मेरी बात ध्यान से सुनो। ठीक है दीपावली का त्योहार है। बड़े उत्साह और हर्ष से मनाओ लेकिन आतिशबाजी का यह खजाना लाने के बगैर क्या दीपावली नहीं मनाई जा सकती?''

मनु पापा से जबरदस्ती बाजू छुड़ाने की कोशिश करता बोला, ''पापा, प्लीज ....। मेरा मूड ऑफ न करो। मेरे सब दोस्त खूब पटाखे छोड़ेंगे। देखते रहना।''

पापा ने थोड़ी सख्ती की तो मनु बैठकर पापा की बात सुनने लगा। पापा ने उसे बताया कि कुछ समय पहले ही एक बड़े शहर में आतिशबाजी के थोक के व्यापारी ने लालच में आकर अपनी दुकान के अलावा रसोईघर की 'कारनसों' पर भी बड़े–बड़े पैकेट जमा कर रखे थे। रसोई में किसी कारणवश उन पटाखों को आग लगी तो गैस सिलेण्डरों तक पहुँच गई। परिणामस्वरूप पूरे घर को आग ने अपनी लपेट में ले लिया और देखते ही देखते व्यापारी को अपने घर के दो–तीन सदस्यों सहित जान से हाथ धोना पड़ा था।

अब दादाजी को भी पता चला तो उन्होंने मनु को डांट पिलाई क्योंकि दीपावली का त्योहार आते ही दादाजी को कुछ घबराहट होने लगती थी। एक तो वे अस्थमा के रोगी थे। दूसरा उन्हें प्रायः नींद भी ठीक से नहीं आती थी। दूषित वातावरण में सांस लेना उनके लिए बड़े संकट वाली बात थी।

आखिर दीपावली का त्योहार आ ही गया। शाम को हर तरफ रंग–बिरंगी रोशनियां नजर आ रही थीं। मनु अपने आतिशबाजी वाले दोनों लिफाफे लेकर घर की छत पर जा चढ़ा। मम्मी ने उसे पानी की बाल्टी भी लेकर जाने के लिए कहा लेकिन बड़ों की बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देना तो उसकी आदत ही बन चुकी थी। मनु ने अपने पास दो–तीन मित्रों को भी बुलाया हुआ था। अब वह एक–एक करके

पटाखे चलाने लगा। कभी आलू बम और कभी रेल। कभी रॉकेट और कभी एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा। अपने हाथ में ही बम पकड़कर वह दोस्तों पर बहादुर बनने का नाटक कर रहा था। कभी–कभी मनु अपने दोस्तों को भी पटाखे चलाने के लिए दे रहा था। कोई पटाखा न फूटता तो वह तुरन्त उसके पास जाकर अपने पांव से ही उसे इधर–उधर हिलाता डुलाता। ऐसा ही एक बम तो उसके पांव मारते ही फट गया लेकिन उसने कोई परवाह न की।

अब बारी आई अनारों वाले लिफाफे की। पूरे बीस अनार थे उसमें। अनार भी बड़े। मनु ने एक–एक करके पांच अनार जलाए। वह हर अनार को हाथ में पकड़कर जला रहा था। वह एक हाथ में जलता हुआ अनार पकड़ता और दूसरे हाथ पर उस अनार से निकल रही कुछ चिंगारियों को गिराता और खुश होकर चिल्लाता, ''देखो, देखो। मेरे हाथ पर चिंगारियां। मुझे कुछ नहीं होता। आग मेरी दोस्त है।''

लेकिन यह क्या? ज्यों ही बड़े अनार को उसने अपने हाथ में उठाया और उसकी चिंगारियों को दूसरे हाथ की हथेली पर गिराने के लिए फैलाया तो अनार उसके हाथ में ही फट गया। बहादुरी दिखाने का नाटक कर रहा मनु ने तो यह सोचा भी नहीं था कि अनार उसके हाथ में भी फट सकता है। मनु जोर–जोर से चिल्लाने लगा। उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। मारे दर्द के वह एकदम दौड़ता हुआ सीढ़ियां उतरा। मम्मी पापा एकदम घबरा गए। पापा ने तुरन्त अपनी कार निकाली और उसे अस्पताल ले आए।

डॉक्टरों ने मनु का उपचार करना आरम्भ कर दिया।

मनु का हाथ काफी जल चुका था। डॉक्टरों ने बताया कि मनु को कम से कम पांच दिन अस्पताल में दाखिल रहना पड़ेगा।

अस्पताल के बेड पर लेटा मनु छत की ओर देखता हुआ गहरी सोच में डूबा हुआ था। उसकी आँखों के सामने सुन्दर लिखावट प्रतियोगिता का गोल्ड मैडल घूम रहा था। लेकिन उसकी अपनी गलती के कारण यह गोल्ड मैडल किसी और छात्र के हिस्से आ गया था।

मनु ख्यालों से बाहर आया तो देखा कि उसके प्रिंसीपल साहब उसके बालों में बड़े प्यार से हाथ फेरते हुए कह रहे थे, ''मनु, तुम्हारी गलती ने तुम्हें कहाँ पहुँचा दिया है। एक तो तुम बड़ा ईनाम लेने से वंचित रह गये हो और दूसरा इतनी बड़ी आतिशबाजी जलाकर तुमने प्रकृति को भी तो नाराज ही किया है न। एक और बात । तुम तो विज्ञान के छात्र हो। ध्वनि प्रदूषण रसायनिक प्रदूषण से कम है क्या? मुझे यह बताओ कि दीपावली जैसे पवित्र पर्व की यही मूल भावना है?''

मनु के पास 'सर' की किसी बात का कोई उत्तर नहीं था। वह बोला, ''सर, आप सभी से बहुत शर्मिंदा हूँ। आगे से कभी ऐसा नहीं होगा।''

मनु ने इतना कहा तो सर ने उसके बालों में प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, ''शाबाश! जो हुआ सो हुआ। अब घबराने की कोई बात नहीं। तुम जल्दी ठीक हो जाओगे।''

कुछ दिनों के पश्चात् मोनू तंदुरुस्त हो गया।

हँसती दुनिया पढ़ते जायें
जीवन में आगे बढ़ते जायें।

लघु कथा : अदिति सक्सेना

मां की शिक्षा

रात को आराम करते हुए मेरी मां ने मुझे समझाना शुरू किया। मां ने कहा– ''प्रत्येक विद्यार्थी के लिए काक चेष्टा, वको ध्यानम्, स्वान निद्रा तथैव च, अल्पाहारी, गृहत्यागी होना आवश्यक है।'' मुझे अपनी मां की बात का अर्थ बिल्कुल भी समझ नहीं आया तो मैंने उनसे कहा कि मां, मुझे इसका अर्थ समझ नहीं आया है, जरा साफ–साफ समझाओ।

तब मां ने बताया कि देखो बेटी, विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहे बच्चों के अन्दर कौआ की तरह प्रयत्नशील व परिश्रमी, बगुले जैसा ध्यान (एकाग्रता), कुत्ते जैसी नींद, थोड़ा भोजन करने वाला और घरेलू बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देने वाला होना चाहिए। इन पांच आदर्श गुणों का जो बच्चे अपने जीवन में ध्यान रखते हैं, उन्हें अवश्य ही बेहतर सफलता मिलती है और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं।

मां के द्वारा बताए गये इन आदर्श गुणों को मैंने अपने जीवन में अपनाना शुरू कर दिया।

जानकारी : किरणबाला

खून का रंग लाल क्यों होता है?

सारी दुनिया के लोग चाहे वे गोरी चमड़ी वाले हों या काली चमड़ी वाले, सभी के खून का रंग लाल ही होता है। जाति, धर्म, नस्ल, लिंग के आधार पर खून के रंग में भिन्नता नहीं होती। किसी भी मनुष्य के खून का रंग हरा, पीला, नीला, गुलाबी, सफेद आदि नहीं होता। जानते है खून का रंग लाल ही क्यों होता है।

यदि हम खून की संरचना को देखें तो उसमें प्लाज्मा श्वेत रक्तकण, लाल रक्तकण और प्लेटलेट्स होते हैं। लाल रक्तकणों की वजह से ही खून का रंग लाल दिखाई देता है। इन रक्तकणों में लाल रंग का हेमोग्लोबिन नामक पिगमेंट होता है, जो खून का रंग लाल बना देता है। हेमोग्लोबिन लोहे और प्रोटीन से मिलकर बनता है। एक सामान्य आदमी के प्रति घन मिलीमीटर में लाल रक्तकणों की संख्या 55 लाख तक होती है। प्रत्येक लाल रक्तकण की आयु चार महीने होती है। उसके बाद वह टूट जाता है तथा उसके स्थान पर नये लाल रक्त कण बनते रहते हैं। जीवनभर इनका बनना और टूटना जारी रहता है। अर्थात् खून का लाल रंग इन कणों में उपस्थित हेमोग्लोबिन के कारण होता है।

इंसान ही क्यों, आमतौर पर जानवरों के रक्त का रंग भी लाल ही होता है।

क्या आप इस बात पर यकीन कर सकते है कि किसी प्राणी के रक्त का रंग नीला हो सकता है? आपको जानकर आश्चर्य होगा कि कटलफिश नामक मछली के रक्त का रंग नीला होता है। इस वर्ग की दूसरी मछलियों के रक्त का रंग भी नीला होता है। इसका कारण यह है कि इसके रक्त में हेमोग्लोबिन की बजाय हेमोसाइनिन नामक पदार्थ होता है। जो रक्त को नीला बना देता है। हेमोग्लोबिन में लोहा होता है जबकि हेमोसाइनिन में तांबा होता है।

कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

दीप जले दीवाली आई

चटख पटाखे छूटते, खूब मचाते शोर।
फुलझड़ियाँ लगती भली, चलती हैं घनघोर।

चले राकेट झूमकर, खुशियों की रफ्तार।
चकरी दीदी कर रही, दीवाली से प्यार।

शोर मचाते बम चले, कर भीषण आवाज।
अनार जलते देखकर, खुश हैं आतिशबाज।

दीप जल रहे खुशी के, बांट रहे उजियारा।
दुख भागा घर छोड़कर, भागा गम अंधियारा।

पाकर सुन्दर रोशनी, हँसने लगे चिराग।
अंधकार ने छेड़ दी, भागमभागी राग।

मतवाले दीपक जले, दीवाली की रात।
चकरी नाची छमाछम, तिमिर की हुई मात।

लड्डू पेड़े अनरसे, और मलाईचाप।
दीवाली में खाइये, गरम जलेबी आप।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

एक बार एक जंगल में एक बकरी अपने बच्चे के साथ रहती थी। उसका नाम था गोलू। वह बहुत शरारती था।

उसे सारा दिन बाहर खेलना अच्छा लगता था। एक दिन वह खेलते-खेलते जंगल की ओर निकल गया।

बकरी ने जब गोलू को बाहर नहीं देखा तो वह परेशन हो गई। वह फटाफट जंगल की ओर भागी। उसे डर था कि गोलू कहीं घने जंगल में न चला जाए। वहाँ तो हर वक्त ही जंगली जानवर शिकार की तलाश में घूमते रहते हैं।
'माँ, माँ, तुमने मुझे ढूँढ लिया।
बकरी थोड़ा ही आगे गई तो देखा कि गोलू पेड़ों के झुंड में छिपा हुआ था। अपनी माँ को वहाँ देखकर वह खुशी से उछलने लगा।
'गोलू, तुम्हें कितनी बार मना किया है इस तरफ आने से।

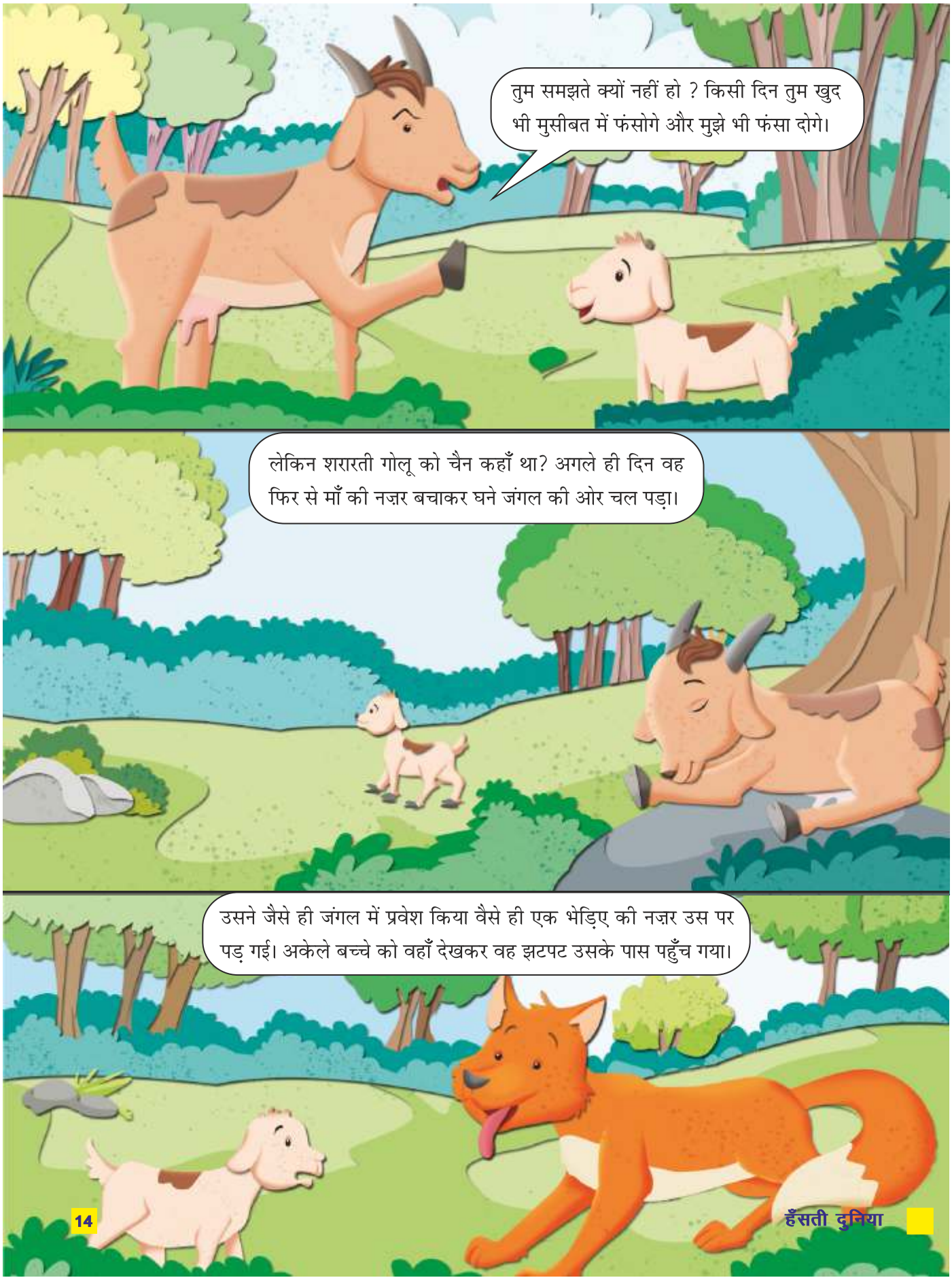
तुम समझते क्यों नहीं हो ? किसी दिन तुम खुद भी मुसीबत में फंसोगे और मुझे भी फंसा दोगे।
लेकिन शरारती गोलू को चैन कहाँ था? अगले ही दिन वह फिर से माँ की नज़र बचाकर घने जंगल की ओर चल पड़ा।
उसने जैसे ही जंगल में प्रवेश किया वैसे ही एक भेड़िए की नज़र उस पर पड़ गई। अकेले बच्चे को वहाँ देखकर वह झटपट उसके पास पहुँच गया।

भेड़िए को यूं अचानक सामने देखकर गोलू घबरा गया वह मदद के लिए चिल्लाने लगा। लेकिन वह भेड़िया उस पर झपटने की पूरी तैयारी कर चुका था।
परन्तु, वह अभी झपटने ही वाला था कि अचानक बकरी अपने मित्रों के साथ वहाँ पहुँच गई। एक शिकारी कुत्ता भी उसका मित्र था। वह भी उनके साथ था।
जैसे ही शिकारी कुत्ता ज़ोर से भौंका, भेड़िया डर गया और वहाँ से भाग खड़ा हुआ और गोलू बच गया।
अब समझ आई, बच्चों! हमें हमेशा अपने बड़ों का कहना मानना चाहिए।

कहानी मोमबत्ती की

दीपावली पर दीपकों के साथ ही मोमबत्तियां भी काफी बड़ी मात्रा में प्रज्वलित की जाती हैं। इस अवसर पर जलायी जाने वाली मोमबत्तियां तरह–तरह के आकर्षक रूपरंग और आकार में बाजार में मिल जाती हैं।

मोमबत्तियों का इतिहास पांच हज़ार वर्ष पुराना है। उस समय यूनान के कुछ नगर–राज्यों में वृक्षों की टहनियों के बीच के हिस्से को पशुओं की चर्बी में भिगोकर मोमबत्तियों की तरह काम में लाया जाता था। बाद में टहनियों के स्थान पर कपास का धागा काम में लिया जाने लगा और चर्बी के स्थान पर मधुमक्खी के छत्ते से प्राप्त होने वाले मोम को उपयोग में लेना शुरू हुआ। कालान्तर में तरह–तरह की रासायनिक विधियों का विकास हुआ और उसी क्रम में पैराफिन मोम का आविष्कार हुआ।

अलग–अलग आकार प्रकार वाली मोमबत्तियों के लिए अलग–अलग प्रकार के सांचे बने होते हैं। इन सांचों में अन्दर की तरफ तेल लगा दिया जाता है, जिससे मोमबत्तियों को निकालने में आसानी रहे। इसके उपरान्त सांचों के बीच में एक पत्ती की सहायता से धागा लगा दिया जाता है। मोमबत्तियों के लिए ऐसा पैराफिन मोम लिया जाता है, जो 1350 डिग्री फारेनहाइट पर पिघलता हो। इस मोम को इन सांचों में डाल दिया जाता है और थोड़ी देर बाद उन्हें निकाल लिया जाता है। बस मोमबत्ती तैयार है। इसके उपरान्त अलग–अलग तरह के आकर्षक डिब्बों में इन्हें पैक करके बाजार में भेज दिया जाता है। वहाँ से ये हमारे घरों में आती हैं और अमावस्या के घनघोर अंधेरे को प्रकाश में बदलकर उसे दीपावली का रूप प्रदान करती हैं।

–प्रस्तुतिः भारती शर्मा

बाल कविता : हरजीत निषाद

दीपों की पंक्ति दिवाली

दीपों की पंक्ति दिवाली।
राम की भक्ति दिवाली।
लक्ष्मी की शक्ति दिवाली।
जगमगाती ज्योति दिवाली।

सच्चाई की रीत दिवाली।
बुराई के विपरीत दिवाली।
सफाई संग प्रीत दिवाली।
पावनता की रीत दिवाली।

महीनों की तैयारी दिवाली।
लगती है प्यारी दिवाली।
दीप छटा न्यारी दिवाली।
खुशी देती सारी दिवाली।

अंधकार से दूर दिवाली।
प्रकाश से भरपूर दिवाली।
अतिशी सरूर दिवाली।
मनाएंगे जरूर दिवाली।

जानकारी : दिनेश दर्पण

पैराशूट की कहानी

पैराशूट सामान्यतः एक छतरी के आकार का दिखाई देता है। खुलने पर इसका व्यास लगभग 24 फुट हो जाता है। खुलने के बाद फैलने से इसमें हवा भर जाती है। जो आसानी से बाहर नहीं निकल पाती और पैराशूट झूले की तरह झूलता हुआ मनुष्य या अन्य किसी तरह के वजन को लेकर आसानी से जमीन पर उतर जाता है।

पैराशूट का कपड़ा रेशम या नायलोन के मजबूत धागों की बुनाई से बनाया जाता है। जब किसी व्यक्ति को हवाई जहाज से नीचे उतारना होता है तो पैराशूट को विशेष प्रकार से लपेटकर उसका बंडल बनाया जाता है। कूदने वाले की पीठ पर बेल्ट की सहायता से बांध दिया जाता है। जब कोई व्यक्ति हवाई जहाज से नीचे कूदता है, तो वह थोड़ा नीचे आने के बाद डोरी को झटका मारकर पैराशूट को खोल लेता है। हवाई जहाज से कूदने से पहले या कूदने के तुरन्त बाद पैराशूट इसलिए नहीं खोलते क्योंकि उसकी डोरी हवाई जहाज के पंख में उलझने का डर रहता है। विशेष प्रकार के पैराशूट में यह विशेषता होती है कि वह व्यक्ति के विमान से कूदने के बाद अपने आप ही खुल जाता है। उसकी डोरी में झटका नहीं मारना पड़ता है। पैराशूट के ऊपर के भाग में एक छोटा–सा छेद रहता है। जिसमें से उसकी अन्दर की हवा धीरे–धीरे निकलती रहती है, इससे हवा के दबाव के कारण पैराशूट के उलटने आदि का भय नहीं रहता है।

पैराशूट की कल्पना संभवतः सबसे पहले विश्व के प्रसिद्ध वैज्ञानिक लिओनार्दो दा विंची ने की थी, परन्तु इसके आविष्कार का श्रेय सेबास्तियन लेनोर्मा नामक फ्रांस के एक व्यक्ति को जाता है। पैराशूट के सिद्धान्त का प्रतिपादन पहले विंची ने किया था परन्तु इस पर कोई परीक्षण किया गया हो ऐसे प्रमाण नहीं मिलते। लेनोर्मा ने अपने बनाये पैराशूट का प्रदर्शन 1783 में एक टॉवर से कूदकर किया था।

वैज्ञानिक उपकरणों के उपयोग

1. सूक्ष्मदर्शी यंत्र – छोटी वस्तुओं को बड़ा दिखाता है।
2. थर्मामीटर – ताप नापने के काम आता है।
3. लैक्टोमीटर – दूध की शुद्धता नापता है।
4. राड़ार – वायुयान को दिशा तथा दूरी बताता है।
5. बैरोमीटर – वायुदाब नापता है।
6. दूरदर्शी – दूर की वस्तु देखने में प्रयोग होता है।
7. रेडिएटर – गाड़ियों के इंजन को ठंडा रखता है।
8. कैलकुलेटर – गणना करने में प्रयुक्त होता है।
9. कार्बोरेटर – हवा तथा पेट्रोल की वाष्प को मिश्रित करता है।
10. पैराशूट – वायुयान से कूदते समय प्रयोग किया जाता है।
11. पेरिस्कोप – किसी बाधा के पार देख सकता है।
12. कैलोरी मीटर – उष्मा की मात्रा नापता है।
13. टेलीप्रिंटर – दूर की सूचनाएं अपने आप छापता है।
14. ट्रांसफॉर्मर – विधुतधारा को नियंत्रित करता है।
15. क्रेस्कोग्राफ – पौधों की वृद्धि नापने में प्रयुक्त होता है।
16. टेलीफोन – दूर की आवाज सुनने के काम आता है।
17. टेलीविजन – दूर के दृश्य (चित्र) दिखाता है।

प्रस्तुति : पृथ्वीराज (घोण्डा)

→

सर्वप्रथम पैराशूट का सफल परीक्षण/प्रदर्शन सन् 1785 में फ्रांस के हवाबाज जे.पी. ब्लैंकार्ड ने किया था। उसने पैराशूट की रस्सी से एक टोकरी बांधकर उस टोकरी में एक कुत्ते को बिठाया और गुब्बारे की मदद से उसे नीचे गिराया था। सन् 1793 में ब्लैंकार्ड एक गुब्बारे की सहायता से बहुत ऊँचाई तक गया और फिर वहाँ से पैराशूट की मदद से नीचे उतरा था। जिसमें उसका एक पैर टूट गया था। राबर्ट काकिंग नामक व्यक्ति ने पैराशूट में कई महत्वपूर्ण सुधार किये। कैप्टन अलबर्ट बेरी नामक एक साहसी व्यक्ति ने सन् 1912 में पहली बार उड़ते हुए हवाई जहाज से कूदकर पैराशूट की सहायता से जमीन पर कुशलतापूर्वक उतर आया।

पैराशूट से कूदने के लिए किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं होती है। दुर्घटनाग्रस्त होते हवाई जहाज से पैराशूट की सहायता से कूदकर अपने प्राण की रक्षा भी की जा सकती है।

पैराशूट का उपयोग बाढ़ से पीड़ित और बर्फबारी से घिरे हुए लोगों की मदद के लिए भी किया जाता है। रोटी, कपड़ा, दवाईयां और अन्य जरूरी सामान को पैराशूट के माध्यम से उसमें बांधकर पहुँचाया जा सकता है। तथा युद्ध के समय शत्रुओं की सेना का घेराव करने के लिए सैनिकों को पैराशूट के माध्यम से उतारा जा सकता है। कभी–कभी पैराशूट का उपयोग जेट विमान को धरती पर उतारने और गति कम करने लिए भी किया जाता है। जिन उपकरणों को गुब्बारों द्वारा मौसम की जानकारी प्राप्त करने के लिए ऊँचाई पर भेजा जाता है। उन्हें परीक्षण करने के बाद जमीन पर पैरशूट के माध्यम से ही नीचे उतारा जाता है।

वर्ग पहेली

प्रस्तुतिः
विकास
अरोड़ा

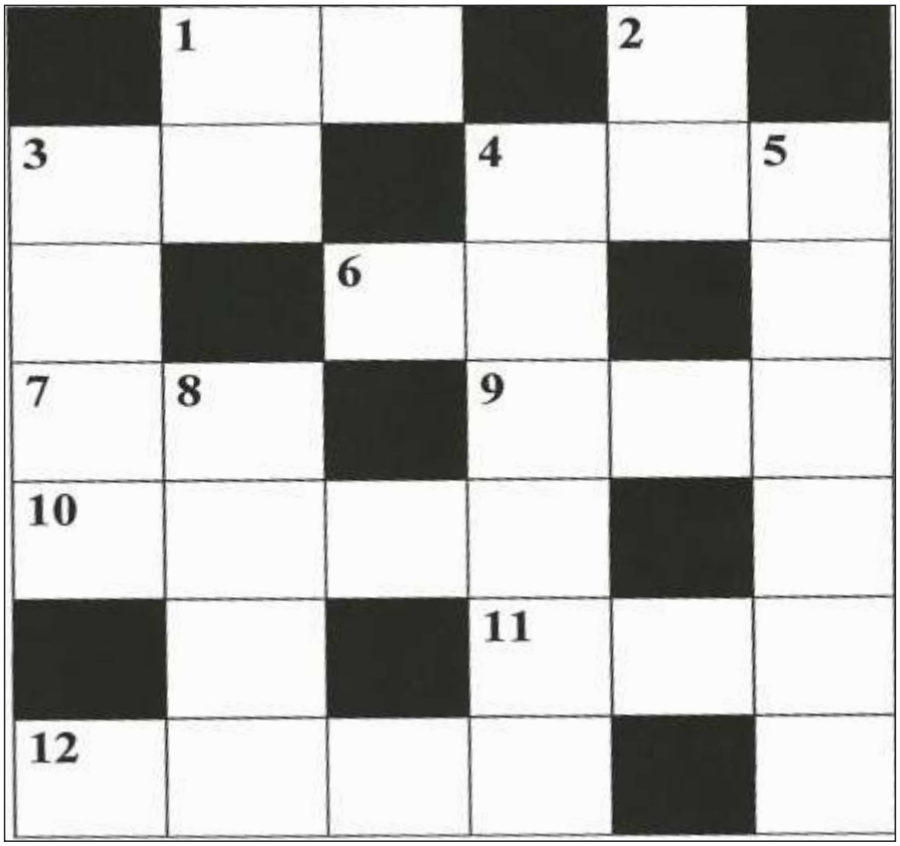

बाएं से दाएं →

1. सावन के महीने में झूला झूलने का त्योहार।
3. इस पंक्ति में छुपी एक नदी को ढूंढिए :
   कोमल सोनल की सहेली है।
4. जलियांवाला बाग हत्याकांड के लिए जिम्मेदार जनरल डायर को गोली ..... सिंह ने मारी थी।
6. शुद्ध शब्द छांटिए : द्वीप/द्वीप।
7. बेमेल शब्द छांटिए : आलू, प्याज, मूली, यम।
9. दही में बूंदी आदि डालकर बनाया गया खाद्य पदार्थ।
10. भारतीय राज्य जिसकी राजधानी का पुराना नाम बम्बई था।
11. हवा का एक पर्यायवाची शब्द।
12. भारत के केन्द्र शासित प्रदेशों का प्रशासन ..... के द्वारा होता है।

ऊपर से नीचे ↓

1. राजा दशरथ की कितनी रानियां थीं?
2. दही ..... से बनती है।
3. साधारण नमक का रासायनिक नाम ..... क्लोराइड है।
4. भारत का ..... राज्यसभा का सभापति भी होता है।
5. पश्चिम बंगाल की पहली महिला मुख्यमंत्री।
8. प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे किस भारतीय राज्य के निवासी हैं?

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

कहानी : जय अहिरवार

जादुई छड़ी

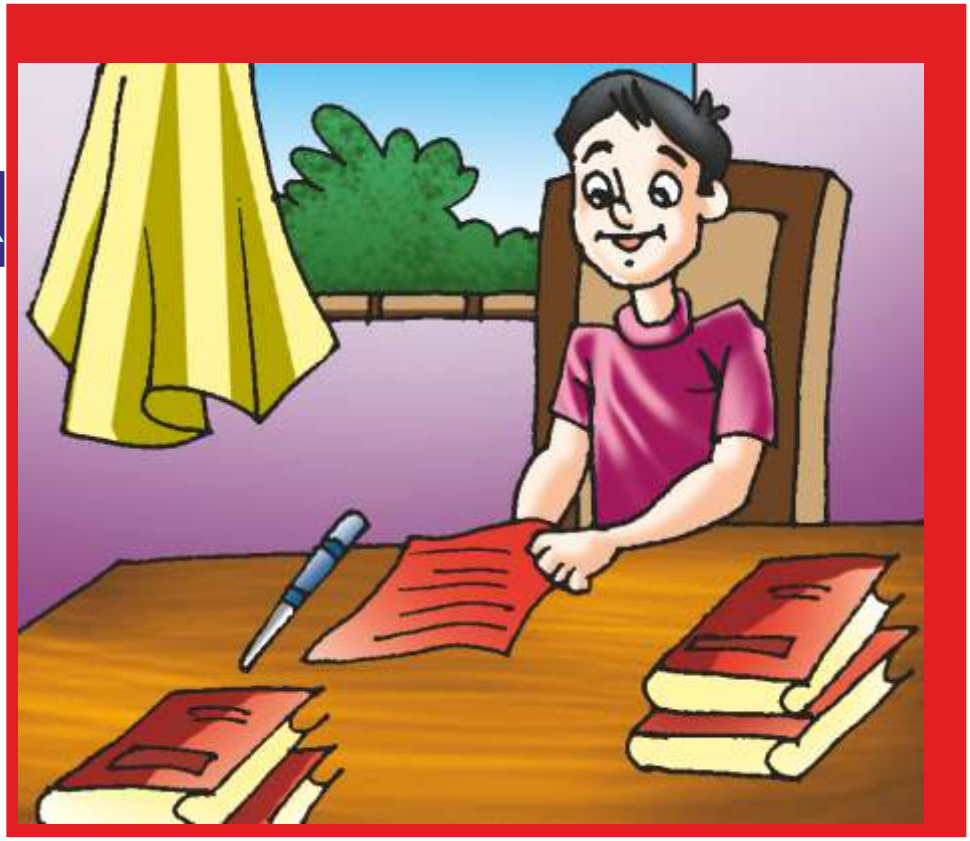

दिव्यांश अपने माता–पिता का इकलौता पुत्र था। दिव्यांश का ध्यान पढ़ाई में कम तथा खेलकूद में ज्यादा रहता। इसी कारण उसके माता–पिता चिंतित रहते। एक दिन दिव्यांश के पिता ने कहा– ''बेटा, आज तुम्हारे अध्यापक ने फिर तुम्हारी शिकायत की है कि आप पढ़ाई में ध्यान नहीं देते हो।''

दिव्यांश ने 'सॉरा पापा' कहकर टाल दिया और खेलने चला गया।

दिव्यांश की मम्मी को एक दिन विचार आया। उन्होंने एक चिट्ठी और एक छड़ी दिव्यांश की पढ़ाई के टेबल पर रख दी। उस चिट्ठी में लिखा था–

''प्रिय दिव्यांश,

मुझे तुम्हारी परेशानी पता है अगर तुम इस जादुई छड़ी को अपने पास रखकर पढ़ाई करोगे तो तुम्हें सब कुछ याद हो जायेगा और तुम कक्षा में प्रथम आओगे।''

तुम्हारी परी दीदी।

उस दिन से रोज दिव्यांश छड़ी अपने पास रखता और मन लगाकर पढ़ाई करता। छड़ी के जादू से उसे सब कुछ याद होने लगा। यहाँ तक कि उसके सभी अध्यापक भी उससे खुश रहने लगे और उसे खूब प्यार करते।

दिव्यांश ने कहा– ''माँ देखो, छड़ी के जादू से मैं कक्षा में प्रथम आया।''

तब उसकी मम्मी ने उसे बताया– ''वो छड़ी कोई करामाती छड़ी नहीं, न ही जादुई है। वो तो मामूली छड़ी है। वो छड़ी मैंने ही तुम्हें सुधारने के लिए रखी थी। दिव्यांश तुम तो अपनी मेहनत से प्रथम आये हो। कोई जादू या छड़ी से नही।''

''समझ गया माँ, मेहनत से ही सफलता मिलती है। छड़ी से नहीं। अब से मैं खूब मेहनत करूँगा।'' दिव्यांश बोला।

स
मा
चा
र

हबल ने विशाल तारों के सबसे बड़े गुच्छे को ढूंढ निकाला

लंदन। नासा 'ईएसए हबल' अंतरिक्ष दूरदर्शी ने नौ विशाल तारों की पहचान की है जिनका द्रव्यमान सूर्य से 100 गुना अधिक है। ये तारे हमारी पृथ्वी से 1,70,000 प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित हैं।

अनुसंधानकर्ताओं ने कहा कि अब तक जिन विशाल तारों की पहचान की गई है, उनमें ये सबसे विशाल हैं। वैज्ञानिकों ने हबल की अनूठी अल्ट्रावॉयलेट क्षमताओं का उपयोग करते हुए सफलतापूर्वक नये तारागुच्छा 'आर–136' की पहचान की। नये कलस्टर में बहुत बड़े गर्म और चमकीले तारे हैं जिनकी अधिकतर ऊर्जा अल्ट्रावॉयलेट किरणों के रूप में निकलती हैं। अनुसंधानकर्ताओं ने दर्जनों ऐसे तारों की पहचान की है जिनका द्रव्यमान सूर्य से 50 गुना अधिक है और साथ ही नौ ऐसे विशाल तारों की खोज की गई है जिनका द्रव्यमान सूर्य से 100 गुना अधिक है। उन्होंने कहा कि हालांकि सबसे विशाल तारे का रिकॉर्ड अब भी 'आर–136–ए–1' के पास है जिसका द्रव्यमान सूर्य की तुलना में 250 गुना अधिक है। इस अनुसंधान का प्रकाशन 'मंथली नोटिसेज ऑफ द रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी' नामक जर्नल में किया गया है। (भाषा)

–बबलू कुमार (सुलतानपुर)

औषधीय गुणों के लिए तुलसी जीनोम का अनुक्रमण

नेशनल सेंटर फार बायोलॉजिकल साइंसेज (एनसीबीएस) के शोधकर्ताओं की एक टीम ने तुलसी के जीनोम के अनुक्रमण में सफलता हासिल की है। इससे औषधीय लाभों की क्षमता वाले यौगिकों का उत्पादन करने वाले जीनों की पहचान करने में मदद मिलेगी।

टीम में एनसीबीएस, इनस्टेम और सीसीएएमपी (सेंटर फोर सेल्यूलर एंड मोलेकूलर प्लेटफॉर्म्स) के शोधकर्ता, बैंगलोर लाइफ साइंसेज क्लस्टर के सभी सदस्य शामिल थे। उन्होंने जीनोमिक आंकड़े जुटाने के लिए तुलसी की पांच प्रजातियों का इस्तेमाल किया। इन प्रजातियों में ओक्मिम टेनुफ्लोरियम सबटाइप रामा, ओ.टेनुफ्लोरियम सबटाइप कृष्णा, ओ. ग्रतिसिमम, ओ. साकारिकम और ओ. किलमंड शामिल हैं। इसके बाद शोधकर्ताओं ने नतीजों की यूरेशियाई पौधे अरबीडोपसिस थलियाना जैसी जानी परखी प्रजातियों से तुलना की जिससे उन्हें तुलसी कृष्णा सबटाइप में विशिष्ट यौगिक के होने का पता चला। यूरेशियाई पौधा पहला ऐसा पौधा था जिसके जीनोम का अनुक्रमण किया गया था और वह कई पौधों की विलक्षणता के आणविक जीवविज्ञान की पहचान करने का एक लोकप्रिय साधन है। यह शोध विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की पहल का हिस्सा है।

शोध का नेतृत्व करने वाली प्रोफेसर सौदामिनी रामनाथन ने कहा, 'ओकिमम प्रजातियों में दूसरे क्रम के 40 मेटाबोलिट्स हैं जिनका मनुष्य एपिजेनिन, सिट्रल, यूजेनॉल, टैक्सोल और यूरोसोलिक एसिड समेत बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल करते हैं।'

अध्ययन के पहले रचयिता अतुल उपाध्याय ने कहा, 'एपिजेनिन, टैक्सोल और यूरोसोलिक एसिड पौधे की कैंसररोधी गुण हैं। सिट्रल अपने एंटी–सेप्टिक प्रवृति के लिए और यूजेनॉल संक्रमणरोधी गुणों आदि के लिए उपयोगी है।' (भाषा)

प्रस्तुति : गोविन्द भारद्वाज,
श्यामसुन्दर श्रीवास्तव

पहेलियां

1. पंख फैला कर रहूं,
मैं खड़ा दलदल में।
मेरा जीवन खिलता है,
बस शीतल जल में।।

2. कांटों के दरम्यां मैं,
हरदम महका करता।
अपनी खुशबू से मैं,
सबका मन हरता।।

3. पीले रंग का रूप है,
धूप संग नाता जोड़ूं।
जहाँ–जहाँ जाए रवि,
मुख अपना मैं मोड़ूं।।

4. फलों का मैं राजा,
खाने में हूँ मजेदार।
पीला–हरा रंग मेरा,
फल बड़ा रसदार।।

5. लाल रंग की गेंद,
मोती भरे हजार।
शबनम जैसा चमके,
भीतर से रसदार।।

6. सीधा अगर पढ़ो जो मुझको,
काट–काट खाकर मुस्काओ।
उल्टा अगर पढ़ो तो मिलकर,
रक्षाबंधन पर्व मनाओ।।

7. बचपन में तो भाए सबको,
किन्तु जवानी में खूंखार।
देख बुढ़ापा उसका बच्चो!
संध्या, नमन करे संसार।।

8. व्योम नगर का एक अनूठा,
देखा हमने राजकुमार।
दिन–दिन घटता–बढ़ता रहता,
बदले नए रूप आकार।।

9. कौवे जैसा रूप है,
कौवे जैसा रंग।
उसकी मीठी बोली सुनकर,
रह जाओगे दंग।।

10. ऐसा धन वह कौन है,
खरचे से बढ़ जाए।
जितना बाँटो उतना बढ़ता,
कोई तो बतलाए।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

आलेख : कमल सोगानी

विलुप्त होने के कगार पर संसार का चौथा बड़ा समन्दर- अराल सागर

दुनिया का चौथा बड़ा समन्दर 'अराल सागर' है। लेकिन अब यह समन्दर 93 प्रतिशत पूरी तरह सूख चुका है और आने वाले दशक में यह पूरी तरह सूख जाएगा। एक तरह से इस समन्दर की आयु पूर्ण हो चुकी है।

यह समन्दर मध्य एशिया में कजाकिस्तान एवं ऊजबेकिस्तान के बीच 'कीजीलकुम मरुस्थल' में है। इस समन्दर की उम्र 55 लाख वर्ष पूर्ण हो चुकी है।

हालांकि वर्ष 1900 के शुरुआती दशक में यह विश्व का चौथा बड़ा सागर हुआ करता था। वेस्टर्न मिशिगन यूनिवर्सिटी के फिलिप मिकलीन के अनुसार 1960 के दशक में सोवियत संघ द्वारा वॉटर डायवर्जन प्रोजेक्ट में क्षेत्र की प्रमुख नदी 'अमुदरिया' को कैस्पियन सागर की तरफ मोड़ने की परियोजना के कारण अराल सागर पूरी तरह सूख गया। इसकी वजह पहाड़ों पर जमने वाली बर्फ का कम होना है जिसके पिघलने से अराल सागर में पानी भरता था। विशेषज्ञों ने आशंका जताई है कि 8–10 वर्षों उपरांत यह सागर पूरी तरह विलुप्त हो जाएगा।

जब यह सागर पूरी तरह सूख जाएगा तब यह संसार की एक विशाल और गहरी खाई का दर्जा हासिल कर लेगा। एक समय ऐसा भी था, जब इस सागर में जलजीवों की भरमार थी तथा यहाँ की उठती लहरों का नजारा बड़ा शानदार था।

यदि मौसम ने अपना रुख बदला और बारिश या बर्फ गिरने की अच्छी संभावना रही तो यह सागर फिर से अपने अस्तित्व में कोई चार दशक बाद आ सकता है।

फिलहाल एक सागर का सूखना पर्यावरण के लिए भी ठेस है, क्योंकि इस सागर से लाखों पेड़–पौधों को पानी नसीब होता था, अब ये पेड़–पौधे भी जल के अभाव में सूखने लगेंगे।

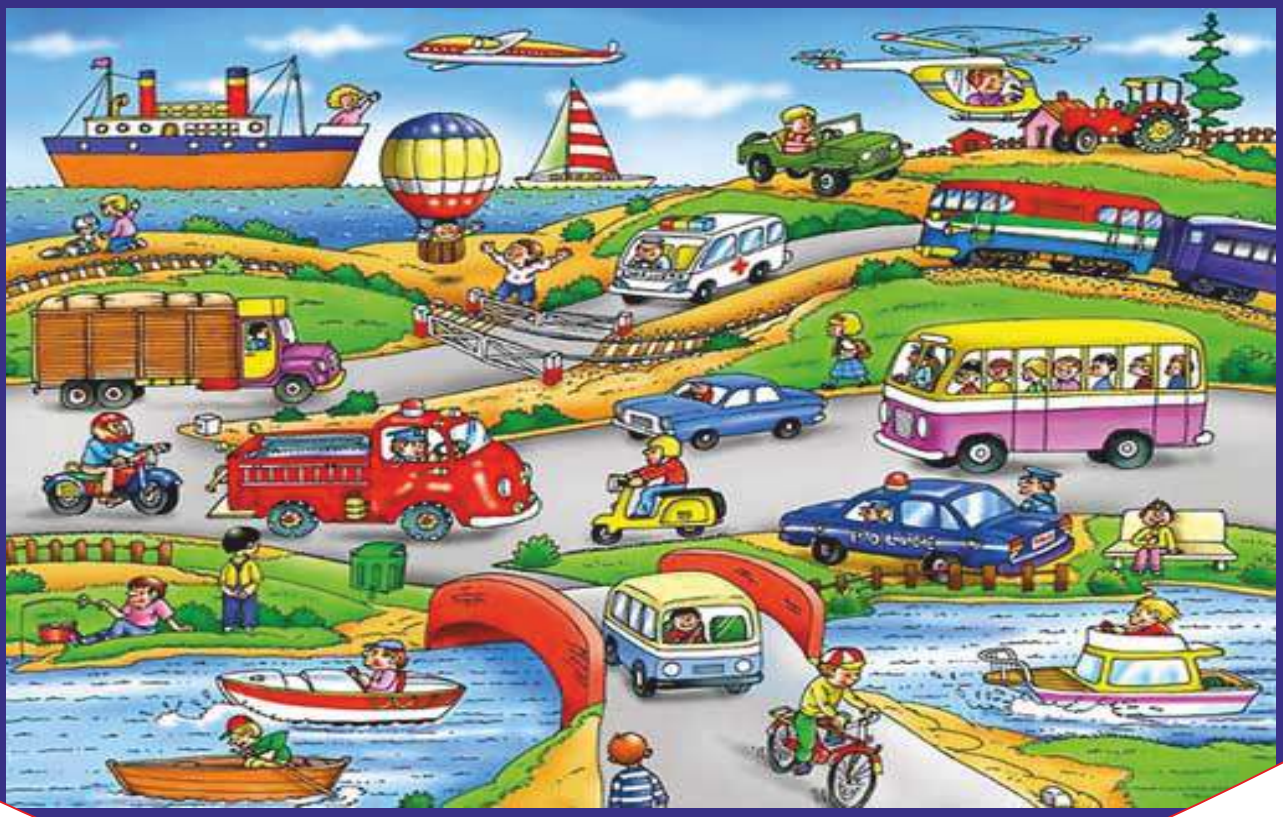

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

परिवहन दिवस (10 नवम्बर) पर विशेष

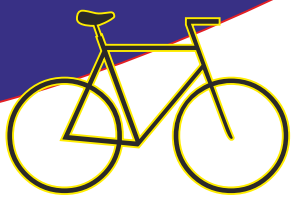

साधन

छोटा चुन्नू ट्राइसिकिल पर,
अपना रोब जमाता।
और डैड मम्मी के आगे,
खूब तेज दौड़ाता ।।

लाल साइकिल लेकर भैया,
शाला पढ़ने जाता।
और सामने देख भीड़ को,
घण्टी खूब बजाता।।

दीदी नीली मोपेड लेकर,
कोचिंग करने जाती।
छोटे–छोटे सब बच्चों को,
मन से खूब पढ़ाती।।

डैडी अपनी बाइक लेकर,
डेली दफ्तर जाते।
संडे के दिन मर्सिडीज में,
हमको खूब घुमाते।।

मेरे छोटे वाले ताऊ,
सदा ट्रेन से जाते।
और गाँव का गेहूं, चावल,
अपने संग ले आते।।

यातायात के

चाचाजी के ठाठ निराले,
जेट प्लेन से आते।
लंदन वाली चाचीजी के,
किस्से खूब सुनाते।।

दादाजी के छोटे भाई,
वायुयान से डरते।
वे पानी वाले जहाज से,
सदा यात्रा करते।।

घोड़ागाड़ी इक्का ताँगा,
सबसे अपना नाता।
ऑटोरिक्शा और टैम्पो,
सबके ही मन भाता।।

आने जाने के ये वाहन,
सबका काम चलाते।
लापरवाही से ये लेकिन,
कभी–कभी टकराते।।

बच्चों वाहन कोई भी हो,
आँखें खोल चलाना।
अगर जरा सी चूक हुई तो,
पड़ सकता पछताना।।

ज्ञान–विज्ञान : किरण बाला

उड़ने वाला कालीन

अलादीन के कालीन की तरह ही एक छोटे कालीन ने प्रिसटन युनिवर्सिटी की प्रयोगशाला में उड़ान भरी है। यह कालीन ऊन का नहीं, बल्कि प्लास्टिक का बना है। दस से.मी. प्रति सेकिण्ड की रफ्तार से उड़ने वाला यह कालीन भौतिकी में पीएचडी कर रहे नोह जैफरिस ने बनाया है। नोह के अनुसार कालीन बनाने में दो साल लगे हैं। यह बिजली के करंट में आने वाले छोटी अनचाही तरंगों के बदलाव से चलता है। इन बदलावों को रिप्पल पॉवर कहा जाता है। इस पर सेंसर लगाए गये हैं। फिलहाल यह जमीन से ज्यादा ऊपर नहीं उड़ पाता।

जमीन पर इलेक्ट्रानिक यंत्र रखा गया है। इसमें करंट आता है। कालीन पर प्लास्टिक बिजली का परिचालक है। यंत्र के करंट में आने वाली तरंगों के बदलाव से कालीन उड़ान भरता है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के लक्ष्मीनारायण महादेवन ने 2007 में एक लेख लिखा था। यह लेख ''फिजिकल रिव्यूलेअर्स'' में प्रकाशित हुआ था। इसी से प्रेरणा लेकर नोह ने यह कालीन बनाने की ठानी।

वैज्ञानिकों के मुताबिक इसका प्रयोग मंगल ग्रह पर अध्ययनों के लिए किया जा सकता है। वे अब कालीन को बड़ा बनाकर सौर ऊर्जा से उड़ाने की तैयारी कर रहे हैं। इस कालीन को बड़ा करने पर इंसानों का बैठ पाना फिलहाल मुश्किल है। इसके लिए कालीन में दोनों ओर 50 मीटर के पंख फैलाव की जरूरत होगी।

बोधकथा : राजेन्द्र परदेसी

मूर्खों का न्याय

एक बार हंस का एक जोड़ा मानसरोवर के सुन्दर परिवेश एवं वातावरण से भटकते हुए किसी उजड़ी और वीरान जगह पहुँच गया। वीरानी को देख हंसिनी ने कहा कि हम लोग कहाँ आ गये हैं। यहाँ न जल है और न खाने के लिए भोजन यहाँ तो हमारा जीना ही मुश्किल हो रहा है।

भटकते–भटकते रात हो गयी थी। इसीलिए हंस ने कहा कि आज की रात तो किसी तरह यहाँ गुजार लो, सुबह होते ही हम वापस अपने घर की ओर लौट चलेंगे।

रात गहराई तो जिस वृक्ष के नीचे हंस–हंसिनी विश्राम कर रहे थे। उस पर एक उल्लू रहता था। वह अचानक शोर मचाने लगा। हंसिनी ने हंस से कहा, ''इस उल्लू के कारण तो मेरा सोना भी मुश्किल हो रहा है।''

हंस ने हंसिनी को समझाया कि आज की रात किसी तरह काट लो, सुबह होते ही यहाँ से निकल चलेंगे। अब तुम्हें समझ में आ गया होगा कि यह स्थान इतना उजाड़ क्यों है। जिस जगह पर मूर्ख उल्लू रहेंगे वह तो वीरान हो ही जायेगा।

वृक्ष पर बैठा उल्लू दोनों की बात सुन रहा था। सुबह हुई तो उल्लू हंस के पास आया और कहा, ''आपको मेरे कारण रात में जो कष्ट हुआ उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।''

हंस ने उत्तर दिया, ''कोई बात नहीं।''

इतना कहकर हंस अपनी हंसिनी को लेकर जाने लगा तो पीछे से उल्लू चिल्लाया– 'आप मेरी पत्नी को लेकर क्यों जा रहे है?'

हंस चौंका और बोला, ''अरे भाई हंसिनी तो मेरी पत्नी है। मेरे साथ ही आयी थी। अब हम लोग वापस अपने घर जा रहे हैं।''

उल्लू ने कहा, ''तुम झूठ बोल रहे हो, रात में मैंने तुम्हें दयावश विश्राम करने की जगह दी और उसके बदले तुम सुबह होते ही मेरी पत्नी को लेकर जाने लगे।''

दोनों के बीच विवाद काफी बढ़ गया तो पंचायत बैठी। उल्लू और हंस की बातों को सभी ने ध्यान से सुना। फिर पंचायत के सदस्यों ने एकान्त में बैठक की। सभी सदस्यों ने आपस में चर्चा की यह बात तो सत्य प्रतीत होती है कि हंसिनी ही हंस की पत्नी है पर यह कुछ देर बाद यहाँ से चला जायेगा और हम लोगों को तो उल्लू के साथ ही रहना है इसलिए उसके विरूद्ध निर्णय देकर दुश्मनी मोल लेना उचित नहीं होगा। पंचों ने सर्वसम्मत से निर्णय सुनाया कि हंसिनी उल्लू की पत्नी है। हंस उस निर्णय के कारण कोई गड़बड़ी न करे इसलिए उसे तुरंत यह स्थान छोड़कर जाना होगा।

पंचों का फैसला सुनकर हंस बहुत परेशान और हताश हुआ। काफी चिल्लाया, चीखा परिणाम कुछ नहीं निकला तो रोते हुए लौट चला।

हंस अभी थोड़ी ही दूर गया होगा कि पीछे से उल्लू की आवाज सुनायी पड़ी, ''मित्र हंस रूको।''

हंस ने विलाप करते हुए पूछा, ''भाई, मेरी हंसिनी को तुमने पहले ही मुझसे छीन लिया, अब क्या बचा है जो उसे भी लेना चाहते हो।''

उल्लू बोला, ''नहीं मित्र, हंसिनी आपकी पत्नी है और आपके साथ ही रहेगी। लेकिन रात में जब मैं शोर मचा रहा था तो आपने अपनी पत्नी से यही तो कहा था कि जहाँ उल्लू रहेंगे वह जगह उजाड़ और वीरान ही रहेगी। आपने देखा कि सच यह नहीं है। सच तो यह है कि जहाँ के मूर्खों की पंचायतें डर के कारण उल्लूओं के पक्ष में अपना निर्णय सुनाती हैं वहाँ सही लोग कैसे रह सकते हैं। इस क्षेत्र की बदहाली और दुर्दशा का कारण यही है।

प्रस्तुति : भारतभूषण शुक्ल

वैज्ञानिक प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1 : विश्व का प्रथम अंतरिक्ष यान कौन है?

प्रश्न 2 : नासा द्वारा प्रक्षेपित प्रथम अंतरिक्ष यान कौन है?

प्रश्न 3 : चीन द्वारा अंतरिक्ष क्लब में प्रवेश कब हुआ?

प्रश्न 4 : विश्व के प्रथम अंतरिक्ष यात्री का क्या नाम है?

प्रश्न 5 : प्रथम प्रायोगिक संचार उपग्रह कौन–सा है?

प्रश्न 6 : प्रथम मौसमी उपग्रह कौन–सा है?

प्रश्न 7 : मंगल ग्रह का सर्वप्रथम अध्ययन करने वाला अंतरिक्ष यान?

प्रश्न 8 : विश्व का प्रथम सुदूर संवेदन उपग्रह कौन–सा है?

प्रश्न 9 : विश्व की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री का क्या नाम है?

प्रश्न 10 : विश्व का प्रथम स्पेस शटल कौन–सा है?

कभी न भूलो

★ हीरे के गुण ही अपने आप में उसको कीमती बनाते हैं। भक्त भी कर्म के द्वारा बोलता है, सबसे असरदायक बोल कर्म ही हुआ करता है।

★ ज्ञान का सूर्य उदय होने पर प्यार का जन्म होता है और नफ़रत समाप्त हो जाती है। जबकि अभिमान के कारण भक्ति और सुमति से भी हाथ धोना पड़ता है।

★ प्यार और सत्कार का मूल आधार ब्रह्मज्ञान है।

★ आँखें बन्द करके चलने में रोशनी भी ठोकरे ही देंगी।

★ जिस इन्सान के पास दौलत, शोहरत, मान, नाम है। अगर उसके पास इन्सानियत और प्यार नहीं है तो वो संत की नज़र में एक जिन्दा लाश है।

★ यदि जाग्रति और अनुभूति नहीं तो शान्ति और सुकून भी नहीं।

★ सभी के साथ अपनेपन की भावना से युक्त व्यवहार करो।

★ नफरत किसी से नहीं, प्यार सबसे करो। – बाबा हरदेव सिंह जी

★ एकजुट होना तो महज शुरुआत है, एक साथ बने रहना प्रक्रिया है लेकिन एक साथ काम करना ही सफलता है। – हेनरी फोर्ड

★ जो बात सिद्धांततः गलत है, वह व्यवहार में भी उचित नहीं है। – डॉ. राजेंद्र प्रसाद

★ बेहतर उपदेश आप अपने होंठों की बजाय अपने जीवन से दे सकते हैं। – ओलिवर गोल्डस्मिथ

★ जो आप स्वयं पसन्द नहीं करते, उसे दूसरों पर मत थोपिए। – कन्फ्यूशियस

★ सम्पन्नता मन से होती है, धन से नहीं। बड़प्पन बुद्धि से होता है उम्र से नहीं। – शेख सादी

★ दीपक स्वप्रकाश के लिए दूसरे दीपों की अपेक्षा नहीं करता। आत्म–ज्ञान हेतु किसी मदद की जरूरत नहीं होती। – आदि शंकराचार्य

★ विद्वान शत्रु भी श्रेष्ठ होता है, मूर्ख मित्र हितकारी नहीं। – विष्णु शर्मा

★ जो अभिमानी और भेददर्शी है, जिसने सबसे वैर बांध रखा है उसके मन को कभी शांति नहीं मिलती। – श्रीमद्भागवत गीता

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

दो बाल कविताएं : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे जो होते हैं
आज्ञाकारी वो होते हैं,
मात–पिता का कहना माने
अच्छे बीज वही बोते हैं।

करते परिश्रम रात–दिन वो
व्यर्थ समय न कभी खोते हैं,
विनम्रता का बाना पहने
आदरभावी वो होते हैं।

करते सहायता सबकी वो
जो बड़े सहाई होते हैं,
नहीं किसी का करे अनादर
सबके ही प्यारे होते हैं।

सदा बड़ों का आदर करना

कर्म से कभी न जी चुराना
सीख कहीं से भी तुम पाना,
आलस कर ना समय गंवाना
बीता समय कभी ना आना।

बड़ा कीमती एक–एक पल
जो खोया तो फिर पछताना,
मिथ्या भाषण कभी न करना
सत्य का साथ सदा निभाना।

सदा बड़ों का आदर करना
आज्ञा लेना शीश झुकाना,
कभी बुराई तुम मत करना
सत्य मार्ग पर कदम बढ़ाना।

स्वावलम्बी होना मनुष्य का सबसे बड़ा गुण

कहानी : अंजू अहिरवार

एक राजा अपनी प्रजा का हाल जानने के लिए वेश बदलकर राज्य का भ्रमण करता था। एक बार वह किसी गाँव से होकर जा रहा था, तो उसने देखा कि रास्ते में एक वृद्ध और दुर्बल लकड़हारा सिर पर लकड़ियों का बोझ लिए हुए चला आ रहा था। राजा को उसकी दुर्बल काया और सिर पर लकड़ियों का भारी गट्ठर देख दया आ गई। उसने लकड़हारे से कहा– बाबा, आप इतने बूढ़े हो गये हैं, तो भी इतनी मेहनत करते हैं। क्या आपको कष्ट नहीं होता?

लकड़हारे ने जवाब दिया– कष्ट काहे का? भगवान ने मुझे ये दो हाथ किसलिए दिये हैं? मेहनत करने के लिए ही तो दिये हैं और अगर मेहनत न करूं तो मेरा गुजारा कैसे होगा?

राजा ने पूछा– आप किसी की मदद क्यों नहीं लेते?

लकड़हारे ने कहा– मैं ठहरा गरीब आदमी। न तो मेरा कोई लड़का है, न कोई लड़की। आखिर मेरी मदद कौन करेगा?

राजा ने पूछा– क्या आपको मालूम नहीं कि यहाँ का राजा गरीब और बेसहारा लोगों को धन देकर उनकी सहायता करता है?

लकड़हारे ने कहा– मालूम है, अच्छी तरह मालूम है परन्तु जब तक मेरे शरीर में शक्ति है। मैं क्यों राजा की दयादृष्टि का मोहताज बनूं। दूसरों पर निर्भर रहना मेरे उसूलों के खिलाफ है।

वृद्ध का स्वाभिमान, स्वावलम्बन और परिश्रमवृत्ति देखकर राजा नतमस्तक हो गया।

राजा ने कहा– काश! इस राज्य में तुम्हारे जैसे और भी आत्मनिर्भर लोग होते तो राजा की आधी चिन्ता स्वयं ही मिट जाती। तब वह अपनी प्रजा के कल्याण के लिए योजनाएं बना सकता और उन पर काम करने के लिए प्रजाजन और धन उपलब्ध होता तो हमारा राज्य निश्चित ही अधिक प्रगति करता।

स्वावलम्बी होना मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है। स्वावलम्बी व्यक्ति निर्भय होकर जीता है। स्वावलम्बी या आत्मनिर्भर व्यक्ति अपने–आप में बड़ी सम्पत्ति होता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों से सहायता लेने की बजाए दूसरों की मदद ही करता है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

क्यों चिंटू, तुम क्यों नहीं चलोगे? अरे हाँ, तुम्हारे पास तो इतने पैसे नहीं होंगे ना, मेले में मजे करने के लिए के लिए।
हाँ! हाँ! हाँ! तुम मेरा मज़ाक उड़ा रही हो, किट्टी।
किट्टी, तुम्हें इस तरह किसी का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।

देखो, देखो मेरा नया पर्स। इसमें बहुत सारे पैसे भी हैं। हम मेले में खूब मज़े करेंगे।
किट्टी, तुम अपना पर्स संभाल कर रखना, मेले में बहुत भीड़ है।
मुझे अपना पर्स संभालना आता है। चलो, मैं तुम सबको पहले आइसक्रीम खिलाऊँगी।

भइया, इन सबको एक-एक आइसक्रीम दीजिए। अरे! मेरे पैसे कहाँ गए? किसी ने मेरा पर्स काटकर सारे पैसे निकाल लिए? अब क्या होगा।

हाँ! हाँ! मोंटू, तुमने ठीक ही कहा था, मुझे अपना पर्स संभाल कर चलना चाहिए था।

अब मुझे समझ में आ गया कि हमें किसी की गरीबी का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए। मैं कभी दोबारा ऐसा दोबारा नहीं करूँगी।,

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

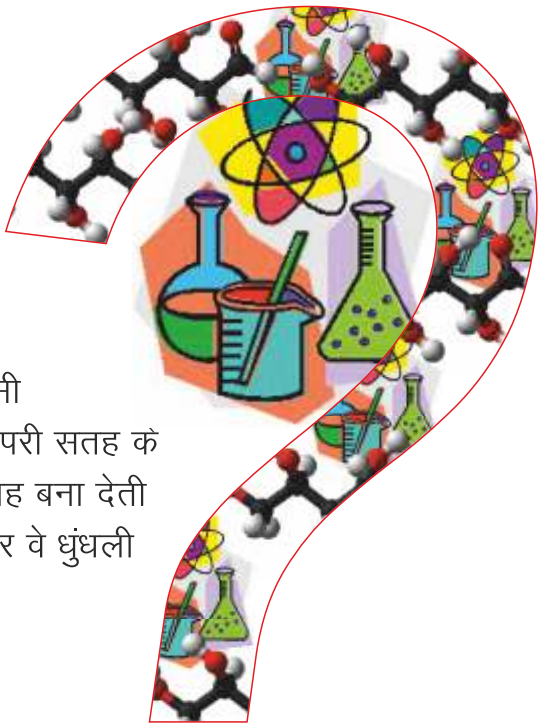

प्रश्न : चमकीली धातुएं वायु में पड़े–पड़े धुंधली क्यों पड़ जाती हैं?

उत्तर : वायु कई गैसों का मिश्रण है। इसमें ऑक्सीजन, नमी, कार्बनडाईऑक्साइड और हाइड्रोजन सल्फाइड जैसी गैसें भी मिली रहती हैं। वायु में पड़े–पड़े धातुओं की ऊपरी सतह के साथ मिलकर ये गैसें ऑक्साइड, सल्फाइड आदि की तह बना देती हैं। इसी कारण धातुओं की चमक मंद पड़ जाती है और वे धुंधली तथा मैली–सी दिखाई देने लगती हैं।

प्रश्न : आग पर सूखी रेत डालने से वह क्यों बुझ जाती है?

उत्तर : आग को जलने के लिए ऑक्सीजन गैस की आवश्यकता पड़ती है। जब जलती हुई आग पर सूखी रेत डाली जाती है तो उसे ऑक्सीजन मिलनी बंद हो जाती है। ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में आग जल नहीं सकती, अतः वह बुझ जाती है।

प्रश्न : साबुन कपड़ों में छिपी मैल को क्यों साफ़ कर देती है?

उत्तर : साबुन का अणु दो भागों का बना होता है– गैर आयनिक ग्रुप और आयनिक ग्रुप। साबुन अणु का गैर आयनिक हाइड्रोकार्बन भाग पानी को दूर करने वाला है परन्तु धूल और ग्रीस कणों को घोल लेता है। साबुन अणु का आयनिक भाग पानी के अणुओं के साथ जुड़ जाता है। अतः धूल एवं मैल को सतह से हटाकर कपड़ों को साफ़ कर देती है।

प्रश्न : एल्यूमीनियम के बर्तन नुकसानदेह क्यों होते हैं?

उत्तर : अमेरिका के नेशनल केमिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट में हुए एक अनुसंधान के अनुसार एल्यूमीनियम के बर्तनों में भोजन पकाने से इसके कुछ अंश भोजन में घुलकर शरीर में चले जाते हैं। इन बर्तनों से एक प्रकार का जहर निकलकर भोजन में फैल जाता है जिसका शरीर की पाचन–क्रिया पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

जगमग दीप

जगमग–जगमग दीप जलाती
आई है दीवाली,
ओठों पे मुस्कान लिए है
रात बावरी काली।

राम श्याम ने खूब सजाया
अपना घर है भैया,
रजनी देखो नाच रही है
करती ता–ता– थैया।

जी भरकर हैं खाते लल्ला
नहीं पेट है खाली,
पूनम सबको बाँट रही है
लिए मिठाई थाली।

पटाखों की धूम मची है
इधर–उधर इतराते,
जरा आग दिखला दी इनको
भागे–भागे जाते।

खुशियों की बारात सजाये
आई है दीवाली,
रह न जाये आज कोई भी
मुस्कानों से खाली।

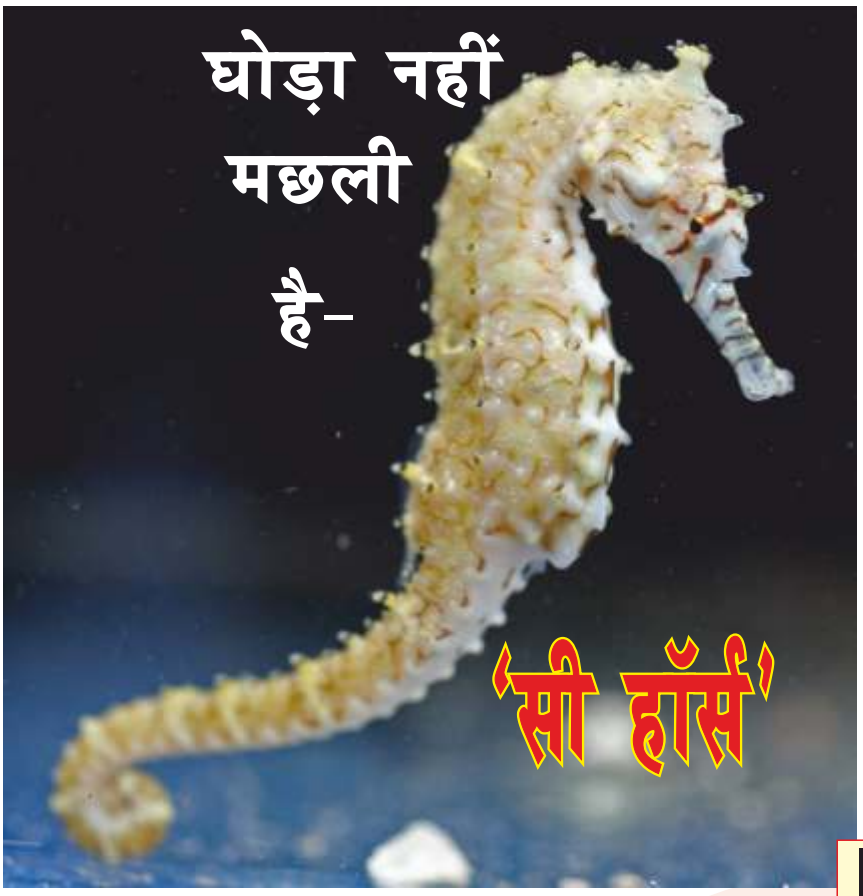

'सी हॉर्स' वास्तव में कोई समुद्री घोड़ा नहीं बल्कि एक सुन्दर–मछली है। जी हाँ, इसका वैज्ञानिक नाम 'हिप्पोकेम्पस' है। ग्रीस के कवियों ने इस शब्द का प्रयोग एक ऐसे काल्पनिक जीव के लिए किया था, जो घोड़े और मछली का संयुक्त रूप हो और जो समुद्री देवता का वाहन भी हो।

इस मछली को 'सी हॉर्स' नाम इसलिए दिया गया क्योंकि इसका थूथन लम्बा होता है जिसके कारण यह मछली एक छोटे जलीय घोड़े जैसी लगती है। वैसे देखा जाए तो 'सी हॉर्स' है एक विचित्र तरह का जीव। इसके विभिन्न अंग अलग–अलग तरह के जीवों के समान लगते हैं।

इस मछली का सिर तथा गर्दन घोड़े के समान, पूँछ बंदर जैसी, आँखें गिरगिट–सी और शरीर आर्माडीलो की तरह होता है। इसकी आँखें एक ही समय में अलग–अलग दिशाओं में काम कर सकती हैं तथा ये इच्छानुसार अपना रंग बदलने में भी सक्ष्म होती हैं। इसके शरीर में हड्डियां भी होती हैं किंतु इसके डैने नहीं होते। यही कारण है यह अन्य मछलियों के मुकाबले धीमी गति से तैरती है। यह शरीर के दोनों तरफ मौजूद पंखों की मदद से तैरती है। ये तैरते समय अपनी पूँछ को इधर–उधर पलटती रहती है। 'सी हार्स' के दाँत भी नहीं होते।

'सी हॉर्स' की दुनियाभर में करीब तीन दर्जन प्रजातियां हैं। इनकी अलग–अलग प्रजातियों की औसत आयु 1 से 5 वर्ष तक होती है। यह मछली 15 से 35 सेंटीमीटर लम्बी होती है। यह दुनियाभर के लगभग सभी समुद्रों में 1 से 15 मीटर तक की गहराई में पाई जाती है।

–प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत सूर्य, पृथ्वी और सौर–प्रणाली आती है। निहारिकायें और अन्य सभी वस्तुएं ब्रह्माण्ड में नहीं आती। अभी तक खोजे जा चुके ब्रह्माण्डों में सबसे बड़े ब्रह्माण्ड का व्यास 250 करोड़ प्रकाश वर्ष है। और इसके अन्दर असंख्य आकाशगंगाए हैं। (एक प्रकाशवर्ष का अर्थ है एक साल में प्रकाश जितनी दूरी तय करता है उसे प्रकाशवर्ष कहते हैं)

कहानी : कंचन शर्मा

मामाजी की सीख

राहुल गर्मी की छुट्टियों में मामाजी के घर आया था। खुले–खुले खेत–खलिहानों में वह दिनभर खेलता रहता। खेतों के पास ही एक आम का बगीचा भी था। कोयल की कू–कू संगीत से राहुल दिनभर चहका रहता। यह सब राहुल को शहर में कहाँ मिलता था। गर्मी की शामों में ठण्डी हवा के झोंके राहुल को और भी मस्त कर देते।

राहुल पांचवी कक्षा में पढ़ता था। अपने साथ होमवर्क करने के लिए स्कूल बैग भी साथ लाया था। उस रोज़ हवा खूब चल रही थी। कुछ देर होमवर्क करने के बाद राहुल को खेलने की सूझी। उसने दनादन अपनी स्कूल की कॉपियों से पन्ने फाड़कर कागज़ के जहाज़ बनाने शुरू किये और लगा उड़ाने।

''हे, हे... देखो,'' जहाज़ उड़ाने के बाद राहुल खुशी–खुशी चिल्लाने लगा। जहाज़ उड़–उड़कर जब खत्म हो गए तो राहुल और जहाज बनाने के लिए जैसे ही पन्ने फाड़ने लगा, इतने में उसके मामाजी ऑफिस से घर पहुँच गये।

''अरे राहुल! रूको! क्या कर रहे हो?'' मामाजी ने राहुल को पन्ने फाड़ने से रूकने के लिए कहा तो राहुल ठिठक गया।

''क्या हुआ, मामाजी!'' राहुल ने पूछा।

''बेटा! यह कॉपी क्यों फाड़ रहे हो?'' मामाजी ने पूछा।

''वो तो मैं कागज़ के जहाज बना रहा हूँ।'' राहुल ने जबाव दिया।

''बेटा, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। देखो तो, तुमने कितने ही पन्ने फाड़–फाड़कर उड़ा दिए। तुम्हे पता है, बहुत सारे बच्चे इसलिए स्कूल नहीं जा पाते क्योंकि उन्हें लिखने के

लिए कॉपी, पैंसिल नहीं मिलते।'' मामाजी ने राहुल को अपनी गोद में बिठाते हुए कहा।

राहुल चुपचाप मामाजी की बातें सुनने लगा। मामाजी ने अपनी कोट की जेब से चॉकलेट निकालकर राहुल को देते हुए कहा, ''यही नहीं तुम जो यहाँ गाँव में हरे–भरे पेड़ देखकर खुश होते हो, इन्हीं पेड़ों को काटकर इनकी लुगदी से कागज बनाए जाते हैं। जरा सोचो, अगर तुम और तुम्हारे जैसे कई बच्चे इसी तरह बिना काम किए नये कागज़ हवा में उड़ाते रहेंगे तो पेड़ों का कितना नुकसान होगा।''

''पर मामू हम तो सभी बच्चे ऐसे ही खेलते हैं। कभी कागज़ का जहाज बनाकर तो कभी कागज की नाव बनाकर।'' राहुल चॉकलेट खाते हुए बोला।

''यही तो तुम सब गलत करते हो। कागज से तो हम भी खेलते थे। मगर पुरानी कक्षा की लिखी हुई कॉपियों के साथ। यही नहीं हम लोग पुरानी कापियों को भी अगली कक्षा के 'रफ' काम के लिए काम में लाते थे। अगर हम में से कोई कागज़ का गलत इस्तेमाल करता था तो हमारे मास्टरजी बहुत नाराज़ होते थे।'' मामाजी ने राहुल को समझाते हुए कहा।

''ये तो आपने बड़े पते की बात बताई मामाजी। फिर तो जब इतनी सारी कॉपियां हर साल हम बच्चे खत्म करते हैं पेड़ों का तो सचमुच नुकसान होता होगा।'' राजू ने संजीदा होकर मामाजी से कहा।

''वो तो है, मगर हम इन भरी हुई कॉपियों को जब रद्दी वाले को बेचते हैं तो वे इसे रिसाइक्लिंग फैक्ट्री को बेच देते हैं। जहाँ पर प्रयोग किया हुआ कागज़ रिसाइक्लिंग होकर दोबारा बाज़ार में आता है और सस्ता भी होता है।'' मामाजी ने कहा तो राहुल चहकते हुए बोला, ''हाँ, मामाजी! टीचर जी भी मुझे रिसाइक्लिंग के बारे में बता रहे थे। इसका मतलब तो यह हुआ कि हमें रिसाइकल्ड पेपर ही खरीदने चाहिएं। सस्ते का सस्ता और पेड़ों का भी भला और अब मैं स्कूल में भी बच्चों को ये सब करने से रोकूंगा और समझाऊंगा भी।''

''शाबाश बेटे! ये हुई ना बात। ये लो कुछ पुराने अखबार, बनाओ जहाज़ और उड़ाओ हवा में, तेज और तेज़।'' मामाजी ने खुश होकर कहा तो राहुल उछलते हुए आंगन की ओर जहाज़ उड़ाने के लिए भागा। मामाजी की सीख काम कर गई।

14 नवम्बर, जन्मदिन पर विशेष

बाल कविता : डॉ. सेवा नन्दवाल

चाचा नेहरु

गर बढ़ना जीवन में आगे
आलस्य त्याग
श्रम करना सीखो
और संकल्प शक्ति से
मनचाहे सपनों की
इबारत लिखना सीखो।

बढ़ते रहो लक्ष्य की ओर
लांघ लेना चाहे विराट
समुद्र हो या मेरू
दे गये यही संदेश सबको
'आराम हराम' के प्रणेता
बच्चों के प्रिय चाचा नेहरु।।

वर्ग पहेली के उत्तर

	1 ती	ज		2 दू	
3 सो	न		4 उ	ध	5 म
डि		6 द्वी	प		म
7 य	8 म		9 रा	य	ता
10 म	हा	रा	ष्ट्र		बै
	रा		11 प	व	न
12 रा	ष्ट्र	प	ति		र्जी

आत्म-समीक्षा : आत्म-चिन्तन

डेनमार्क के मूर्तिकार थोबिडन अपने समय के प्रसिद्ध कलाकार थे। अपने जीवनकाल में उन्होंने अनेक सुन्दर मूर्तियों का निर्माण किया। एक दिन एक सभा में एक प्रशंसक ने उनसे पूछा– जनाब, आपने किस गुरु से मूर्तिकला सीखी?

थोबिडन मुस्कुराए और बोले– आत्म–सुधार मेरा स्कूल है और आत्म–समीक्षा मेरा गुरु। मैंने सदैव अपनी कलाकृतियों में कमियों को खोजा और उन्हें दूर करने की कोशिश की। किसी भी मूर्ति को अच्छा बनाने के लिए जो जरूरी था उसे अविलम्ब अपनाया। इन्हीं कारणों से मैं आज इस मुकाम पर पहुँच पाया हूँ।

–प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल

पढ़ो और हँसो

डॉ. ने बुखार मापने के लिए थर्मामीटर एक औरत के मुँह में रखकर कुछ देर मुँह बन्द रखने को कहा।

औरत को काफी देर तक खामोश बैठा देखकर ग्रामीण पति ने भावुक होकर पूछा– डॉक्टर साहब, ये डंडी कित्ते की आवै है?

★ ★ ★

सिक्योरिटी गार्ड की इण्टरव्यू देने आये उम्मीदवार से सुपरवाइजर ने पूछा– तुम्हारा नाम क्या है?

उम्मीदवार : इंगलिश में 'ब्लैक लॉयन',

सुपरवाइजर : और हिन्दी में,

उम्मीदवार : कालू सिंह।

★ ★ ★

डॉक्टर के बन्द क्लीनिक के सामने लम्बी लाईन लगी थी। एक आदमी बार–बार आगे क्लीनिक की तरफ जाने की कोशिश करता तो लोग उस उसे पकड़कर पीछे धकेल देते। आखिर आदमी बोला– लगे रहो, लाईन में। मैं भी क्लीनिक नहीं खोलूंगा।

★ ★ ★

सब्जी बेचने वाले के घर जब बच्चा हुआ तो एक महिला ने कहा– बधाई हो, बच्चा कैसा है?

–एकदम ताजा है बहन जी।– सब्जी बेचने वाले ने जवाब दिया।

– आकाश मेघानी (गोंदिया)

डॉक्टर : यह गोली पेटदर्द के लिए और यह सरदर्द के लिए।

मरीज : पर डॉक्टर साहब! दोनों गोली तो पेट में ही जाएंगी। फिर उसे पता कैसे चलेगा कि किसे कहाँ जाना है।

★ ★ ★

अध्यापक ने कक्षा के सभी विद्यार्थियों को क्रिकेट पर निबन्ध लिखने को कहा। सभी विद्यार्थी निबन्ध लिख रहे थे। सिवाय आलसी अंकित के।

अंकित ने पूरे निबन्ध को एक वाक्य में ही समेट लिया। उसने लिखा– बारिश की वजह से आज मैच रद्द हो गया है।

★ ★ ★

चिंटू को एक गधे ने लात मारी और झाड़ियों में छुप गया। तभी चिंटू ने एक जेब्रा देखा। देखते ही उसने जेब्रा को पीटना शुरू कर दिया।

किसी ने पूछा– चिंटू, तुम्हें लात तो गधे ने मारी थी और तुम बेचारे जेब्रा को क्यों पीट रहे हो?

चिंटू बोला– लो तुम भी खा गये ना धोखा। अरे, यह वही गधा है। ट्रैक सूट पहनकर मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है।

– राकेश वलेचा (गोंदिया)

नरेन्द्र आँखें बन्द करके शीशे के सामने खड़ा था। उसकी पत्नी ने पूछा– ऐ जी, आप यह क्या कर रहो हो,

नरेन्द्र बोला– मैं देख रहा हूँ कि मैं सोता हुआ कैसा दिखता हूँ।

★ ★ ★

मास्टर जी : (सुमित से) फोर्ड क्या है?

सुमित : गाड़ी।

मास्टर जी : अच्छा बताओ, ऑक्सफोर्ड क्या है?

सुमित : जी, बैलगाड़ी।

★ ★ ★

एक शिक्षा अधिकारी स्कूल में मुआयना करने आया तो देखा कि एक अध्यापक कुर्सी पर बैठे–बैठे सो रहे थे।

शिक्षा अधिकारी ने उन्हें जगाया और पूछा– आप क्लास में सो रहे हैं?

अध्यापक : जी नहीं महोदय! मैं तो इन बच्चों को समझा रहा था कि प्राचीनकाल में कुम्भकर्ण कैसे सोता था।

★ ★ ★

मीना : क्या बताऊँ मेरा मुन्ना तो हरदम अंगूठा ही चूसता रहता है, कोई उपाय बताओ?

नीतू : तुम ऐसा करो, अपने मुन्ने को एक ढ़ीली निक्कर पहना दो। दिनभर वह अपनी निक्कर को ही सम्भालता रहेगा और अंगूठा चूसने की आदत दूर हो जाएगी।

– संजय कुमार (दिल्ली)

बच्चा : पिताजी, यहाँ क्या हो रहा है और इतने सारे लोग क्यों दौड़ रहे हैं।

पिताजी : बेटे, यहाँ 'रेस' हो रही है जीतने वाले एक को 'गोल्ड मैडल' मिलेगा।

बच्चा : अगर जीतने वाले एक को ही मिलेगा तो बाकी लोग क्यों दौड़ रहे हैं?

★ ★ ★

डॉक्टर : अच्छे स्वास्थ्य के लिए रोजाना व्यायाम किया करो।

राजेश : जी मैं रोजाना क्रिकेट और फुटबाल खेलता हूँ।

डॉक्टर : कितनी देर खेलते हो?

राजेश : जब तक मोबाइल की बैटरी खत्म नहीं हो जाती।

– गुरचरन आनन्द (लुधियाना)

पहेलियों के उत्तर :

1. कमल, 2. गुलाब, 3. सूरजमुखी, 4. आम, 5. अनार, 6. खीरा, 7. सूर्य, 8. चन्द्रमा, 9. कोयल, 10. विद्या धन।

जन्म दिन मुबारक

खुशी (बीकानेर)

कायरा (अहमदाबाद)

निकिता (जयपुर)

निहारिका (ग्रेटर नोएडा)

अशवीना (दिल्ली)

मानवी (होशियारपुर)

हैवन सुमन (फगवाड़ा)

निशा (फतेहगढ़ चूड़ियां)

शशांक (मिर्जापुर)

कनिका (इन्द्री)

आयुष (सहजौली)

आकाशदीप (खाम्बरा)

गुरमन (भिलाई)

अर्शनूर (दिल्ली)

सलोनी (दतिया)

प्रांजल (घरौण्डा)

हरसहज (धामियां)

मृणाल (महासमुंद)

प्रियांशू (दिल्ली)

अर्पित (लखनऊ)

पायल (तिरोडा)

रंजना (थाने)

देव बन्सीवाल (दिल्ली)

संतुष्ट (श्रीगंगानगर)

हार्दिक (पौड़ी गढ़वाल)

सुरखाब सिंह (गुरदासपुर)

काव्यांश (सहारनपुर)

मंथन (नागपुर)

गगनदीप (दादरी)

नवप्रीत (काशीपुर)

नवकरन (कपूरथला)

उदान्तिका (पंचकुला)

ध्रिवेन (भायंदर)

किर्तीका (तिरोडा)

देवराज (इन्द्री)

स्पर्श (अल्मोड़ा)

अशमिता (दिल्ली)

सक्षम (आगरा)

विभोर (बरनाला)

स्वर्ण कुमारी (समस्तीपुर)

सिमरजीत (दिल्ली)

अवरित (सहारनपुर)

कुलदीप (समस्तीपुर)

तन्मय (दिल्ली)

खुशी (कांदिवली)

आश्विक (इलाहाबाद)

समदीप (जालन्धर)

नेहा (हिसार)

कुन्दन (जगाधरी)

आयुष (मरोली बाजार)

समदीश (सारदुलगढ़)

एकता (अहमदाबाद)

तहजीब (बागड़िया)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

सितम्बर अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

निष्ठा छाबड़ा
आयु 12 वर्ष
सी–8, सिन्धी कॉलोनी,
राजा पार्क, जयपुर (राजस्थान)

द्वितीय :

दीप्ति राणा
आयु 12 वर्ष
3252/1, धनास,
चण्डीगढ़

तृतीय :

याचिका
आयु 9 वर्ष
683/11, अशरी गेट,
जीन्द (हरियाणा)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

भव्यम (नाभा रोड, पटियाला),
सिमरन (गांगोला मोहल्ला, अल्मोड़ा),
शगुन (पुलिस लाईन, अल्मोड़ा),
नेहल (मुर्तिजापुर),
सुनिधि सिंह (सिविल लाईन, मथुरा),
अर्पित (अजय नगर, अजमेर),
ध्रुव (डुगरी ढांडरा, लुधियाना),
विभोर (लक्खी कॉलोनी, बरनाला),
ऐश्वर्या (रक्षक कॉलोनी, हिन्दलगा),
नंदिनी (जलालाबाद),
ऋतिका (भागवतपुर),
जगरूप सिंह (अधोया),
प्रेम प्रकाश (सरदार शहर),
अनुपमा (जैंती),
भाविका (एल्डिको कॉलोनी, लखनऊ),
शाश्वत (आलमपुर),
भूमिका (मोहाली),
अंशू (फतेहगढ़ चूड़ियां),
सुदीक्षा (कवैया),
अक्षिता (अम्मण),
स्वीटी (जगतदल),
आयशा (नई दिल्ली),
लतिका (सरदार नगर),
अंतरा (हनुमान मार्ग, दिल्ली),
अरमान (रानी बाग, दिल्ली)।

नवम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर **20 नवम्बर** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009** को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जनवरी 2017** अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

चित्र बनाकर रंग भरो

प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

हरे भरे उद्यान के पौधों के फूल और पत्तियों को तोड़कर कौन खा रहा है?
उस नटखट व शैतान प्राणी को देखने के लिए एक से 54 तक बिन्दु मिलाओ
और फिर उसमें सुन्दर रंग भरो।

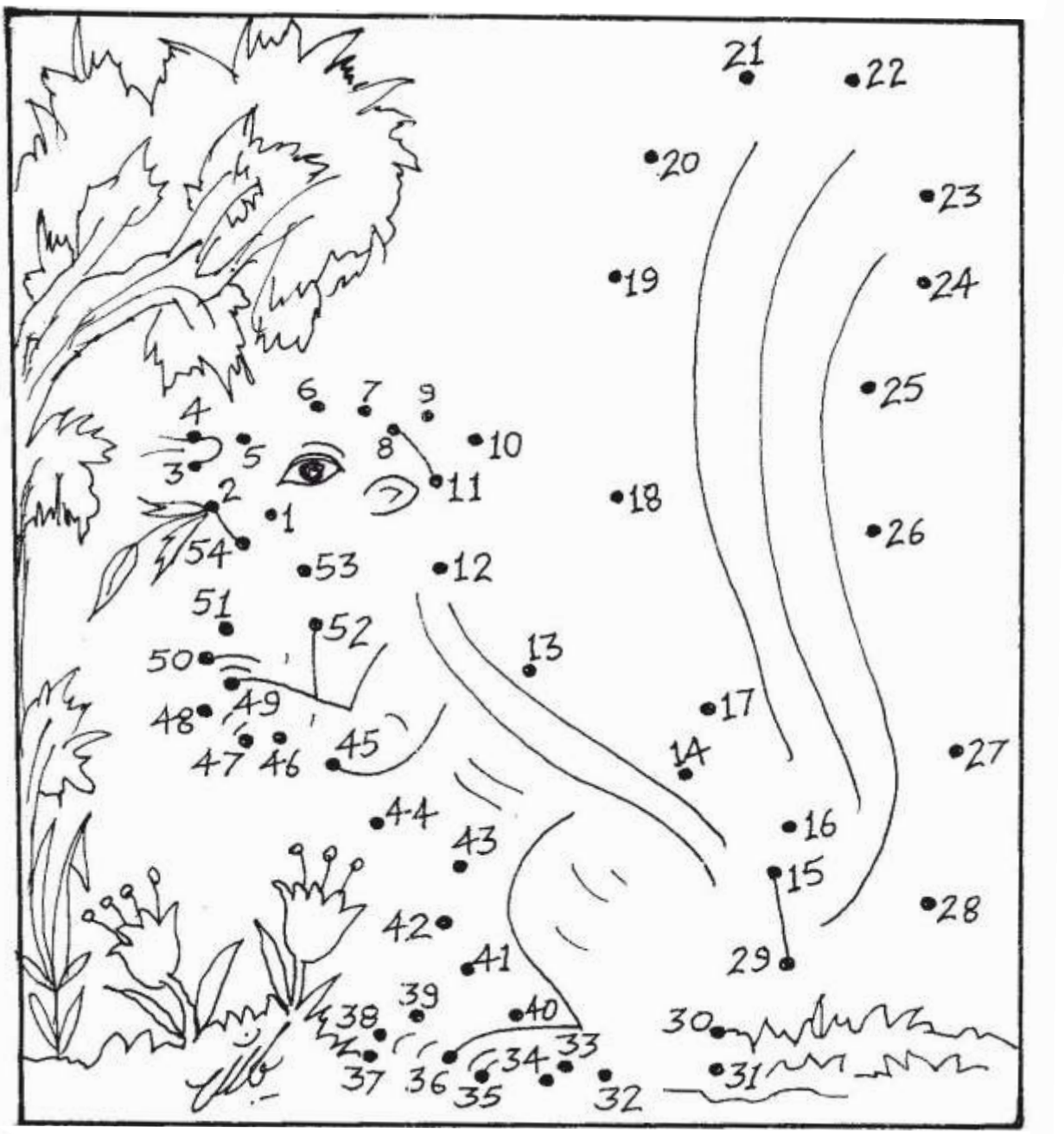

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

सन्त निरंकारी
(ग्यारह भाषाओं में)

एक नज़र
(तीन भाषाओं में)

हँसती दुनिया
(चार भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI-400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan, #7, Govindan Street, Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai, CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, Kazidiha, Post Madhupatna, CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

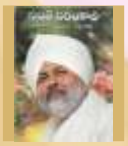

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan, No. 6-2-970, Khairtabad, HYDERABAD-
Pin : 500 029
Ph. 0104-23317879

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 31, Pratapganj, VADODARA-390002 (Guj.)
Ph. 0285-275068

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 88, Rattanvillas Road, Southend Circle, Basavangudi, BELGURU-560 004 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan, KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2015-17
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story